

हरिपदपाद्यतरङ्गिणि गङ्गे हिमविधुमुक्ताधवलतरङ्गे ।

दूरीकुरु मम दुष्कृतिभारं कुरु कृपया भवसागरपारम् ॥ ३ ॥

तव जलममलं येन निपीतं परमपदं खलु तेन गृहीतम् ।

मातरङ्गे त्वयि यो भक्तः किल तं द्रष्टुं न यमः शक्तः ॥ ४ ॥

पतितोद्धारिणि जाह्नवि गङ्गे खण्डितगिरिवरमण्डितभङ्गे ।

भीष्मजननि हे मुनिवरकन्ये पतितनिवारिणि त्रिभुवनधन्ये ॥ ५ ॥

कल्पलतामिव फलदां लोके प्रणमति यस्त्वां न पतति शोके ।

पारावारविहारिणि गङ्गे विपुखयुवतिकृततरलापाङ्गे ॥ ६ ॥

हे गंगे! तुम श्रीहरिके चरणोंकी चरणोदकमयी नदी हो, हे देवि! तुम्हारी तरंगों हिम, चन्द्रमा और माताको भाँति श्वेत हैं, तुम मेरे पापोंका भार दूर कर दो और कृपा करके मुझे भवसागरके पार उतारो ॥ ३ ॥

हे देवि! जिसने तुम्हारा जल पी लिया, अवश्य ही तबते परमपद पा लिया, हे मातः गंगे! जो तुम्हारी भक्ति करता है, उसको यमराज नहीं देख सकता (अर्थात् तुम्हारे भक्तगण यमपुरीमें न जाकर वैकुण्ठमें जाते हैं) ॥ ४ ॥

हे पतितजनोंका उद्धार करनेवाली जह्नुकुमारी गंगे! तुम्हारी तरंगों गिरिराज हिमालयको खण्डित कम्के बहती हुई सुशोभित होती हैं, तुम भीष्मको जननी और जह्नुमुनिकी कन्या हो, पतितपावनी होनेके कारण तुम त्रिभुवनमें धन्य हो ॥ ५ ॥

हे मातः! तुम इस लोकमें कल्पलताकी भाँति फल प्रदान करनेवाली हो, तुम्हें जो प्रणाम करता है, वह कभी शोकमें नहीं पड़ता, हे गंगे! मानिनि वानिताके समान चंचल कटाक्षवाली तुम समुद्रके साथ विहार करती हो ॥ ६ ॥

तव चेन्मातः स्रोतःस्नातः पुनरपि जठरे सोऽपि न जातः ।
 नरकनिवारिणि जाह्नवि गङ्गे कलुषविनाशिनि महिमोत्तुङ्गे ॥ ७ ॥
 पुनरसदङ्गे पुण्यतरङ्गे जय जय जाह्नवि करुणापाङ्गे ।
 इन्द्रमुकुटमणिराजितचरणो सुखदे शुभदे भृत्वशरण्ये ॥ ८ ॥
 सेर्ग शोकं तापं पापं हर मे भगवति कुमतिकलापम् ।
 त्रिभुवनसारे वसुधाहारे त्वमसि गतिर्मम खलु संसारे ॥ ९ ॥
 अलकानन्दे परमानन्दे कुरु करुणामयि कातरवन्द्ये ।
 तव तटनिकटे यस्य निवासः खलु वैकुण्ठे तस्य निवासः ॥ १० ॥

हे गंगे! जिसने तुम्हारे प्रवाहमें स्नान कर लिया, वह फिर
 मातृगर्भमें प्रवेश नहीं करता, हे जाह्नवि! तुम भक्तोंको तरकसे
 बचाती हो और उनके पापोंका नाश करती हो, तुम्हारा माहात्म्य
 अतीव उच्च है ॥ ७ ॥

हे करुणाकटाक्षवाली जह्नुपुत्री गंगे! मेरे आवन अंगोंपर अपनी
 आवन तरंगोंमें युक्त हो उल्लसित होनेवाली, तुम्हारी जय हो। जय हो ॥
 तुम्हारे चरण इन्द्रके मुकुटमणिसे प्रदीप्त हैं, तुम सबको सुख और शुभ
 देनेवाली हो और अपने सेवकोंको आश्रय प्रदान करती हो ॥ ८ ॥

हे भगवति! तुम मेरे रोग, शोक, ताप, पाप और कुमति-
 कलापको हर लो, तुम त्रिभुवनकी सार और वसुधाका हार हो,
 हे वंद्यि! इस संसारमें एकमात्र तुम्हीं मेरी गति हो ॥ ९ ॥

हे दुःखियोंकी वन्दनीया देवि गंगे! तुम अलकापुरीकी आनन्द
 देनेवाली और परमानन्दमयी हो, तुम मुझपर कृपा करो, हे मातः ।
 जो तुम्हारे तटके निकट वास करता है, वह मानो वैकुण्ठमें ही वास
 करता है ॥ १० ॥

वरमिह नीरे कमठो मीनः किं वा तीरे शरटः क्षीणः ।
 अथवा श्वपचो मलिनो दीनस्तव न हि दूरे नृपतिकुलीनः ॥ ११ ॥
 भो भुवनेश्वरि पुण्ये धन्ये देवि द्रवमयि मुनिवरकन्ये ।
 गङ्गास्तवमिमममलं नित्यं पठति नरो यः स जयति सत्यम् ॥ १२ ॥
 येषां हृदये गङ्गाभक्तिस्तेषां भवति सदा सुखमुक्तिः ।
 मधुराकान्तापञ्जटिकाभिः परमानन्दकलितललिताभिः ॥ १३ ॥
 गङ्गास्तोत्रमिदं भवसारं वाञ्छितफलदं विमलं सारम् ।
 शङ्करसेवकशङ्कररचितं पठति सुखी स्तव इति च समाप्तः ॥ १४ ॥
 ॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं श्रीगङ्गास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

हे देवि ! तुम्हारे जलमें कच्छप या मीन बनकर रहना अच्छा है, तुम्हारे तीरपर दुबला-पतला गिरगिट (कुकलास) बनकर रहना अच्छा है या अति मलिन दीन चाण्डालकुलमें जन्म ग्रहण कर रहना अच्छा है, परंतु (तुमसे) दूर कुलीन नरपति होकर रहना भी अच्छा नहीं ॥ ११ ॥

हे देवि ! तुम त्रिभुवनकी ईश्वरी हो, तुम पावन और धन्य हो, जलमयी तथा मुनिवरकी कन्या हो । जो प्रतिदिन इस गंगास्तावका पाठ करता है, वह निश्चय ही संसारमें अथलाभ कर सकता है ॥ १२ ॥

जिनके हृदयमें गंगाके प्रति अचला भक्ति है, वे सदा ही आनन्द और मुक्तिलाभ करते हैं; यह स्तुति परमातन्दनयी सुललित मदावलीसंयुक्त, मधुर और कमनीय है ॥ १३ ॥

इस असाठ संसारमें उक्त गंगास्तोत्र ही निर्मल सारवान् पदार्थ है, यह भक्तोंको अभिलाषित फल प्रदान करता है, शंकरके सेवक शंकरान्तर्यामिकृत इस स्तोत्रको जो पढ़ता है, वह सुखी होता है—इस प्रकार यह स्तोत्र समाप्त हुआ ॥ १४ ॥

॥ इस प्रकार श्रीमत् शंकराचार्यविरचित श्रीगंगास्तोत्र सम्पूर्ण हुआ ॥

५१ — गङ्गादशहरास्तोत्रम्

ॐ नमः शिवायै गङ्गायै शिवदायै नमो नमः ।
 नमस्ते विष्णुरूपिण्यै ब्रह्ममूर्त्यै नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥
 नमस्ते रुद्ररूपिण्यै शाङ्कर्यै ते नमो नमः ।
 सर्वदेवस्वरूपिण्यै नमो भेषजमूर्तये ॥ २ ॥
 सर्वस्य सर्वव्याधीनां भिषक्छ्रेष्ठ्यै नमोऽस्तु ते ।
 स्थासुजङ्गमसम्भूतविषहन्त्यै नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥
 संसारविषनाशिन्यै जीवनायै नमोऽस्तु ते ।
 तापत्रितयसंहन्त्यै प्राणेश्यै ते नमो नमः ॥ ४ ॥
 शान्तिसन्तानकारिण्यै नमस्ते शुद्धमूर्तये ।
 सर्वसंशुद्धिकारिण्यै नमः पापारिमूर्तये ॥ ५ ॥

ॐ शिवस्वरूपा श्रीगंगाजीको नमस्कार है। कल्याणदायिनी गंगाजीको नमस्कार है। हे देवि गंगे ! आप विष्णुरूपिणी हैं, आपको नमस्कार है। ब्रह्मस्वरूपा ! आपको नमस्कार है, रुद्ररूपिणी ! आपको नमस्कार है। शंकरप्रिया ! आपको नमस्कार है, नमस्कार है। देवस्वरूपिणी ! आपको नमस्कार है। ओषधिरूपा ! आपको नमस्कार है ॥ १-३ ॥

आप सबके सम्पूर्ण रोगोंकी श्रेष्ठ वैद्या हैं, आपको नमस्कार है। स्थावर और जंगम प्राणियोंसे प्रकट होनेवाले विषका आप नाश करनेवाली हैं, आपको नमस्कार है। संसाररूपा विषका नाश करनेवाली जीवनरूपा आपको नमस्कार है। आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक—तीनों प्रकारके क्लेशोंका संहार करनेवाली आपको नमस्कार है। प्राणोंकी स्वामिनी आपको नमस्कार है, नमस्कार है ॥ ४-५ ॥

शान्तिका विस्तार करनेवाली शुद्धस्वरूपा आपको नमस्कार है। सबको शुद्ध करनेवाली तथा पापोंकी शत्रुस्वरूपा, आपको नमस्कार है।

भुक्तिमुक्तिप्रदायिन्यै भद्रदायै नमो नमः ।
 भोगोपभोगदायिन्यै भोगवत्यै नमोऽस्तु ते ॥ ६ ॥
 मन्दाकिन्यै नमस्तेऽस्तु स्वर्गदायै नमो नमः ।
 नमस्त्रैलोक्यभूषायै त्रिपथायै नमो नमः ॥ ७ ॥
 नमस्त्रिशुक्लसंस्थायै क्षमावत्यै नमो नमः ।
 त्रिहुताशनसंस्थायै तेजोवत्यै नमो नमः ॥ ८ ॥
 नन्दायै लिङ्गधारिण्यै सुधाधारात्मने नमः ।
 नमस्ते विश्वमुख्यायै स्वत्यै ते नमो नमः ॥ ९ ॥

भोग, मोक्ष तथा कल्याण प्रदान करनेवाली आपको बार-बार नमस्कार है। भोग और उपभोग देनेवाली भोगवती नामसे प्रसिद्ध आप सातालगंगाको नमस्कार है ॥ ५-६ ॥

मन्दाकिनी नामसे प्रसिद्ध तथा स्वर्ग प्रदान करनेवाली आप आकाशगंगाको बार-बार नमस्कार है। आप भूतल, आकाश और माताल—तीन मार्गोंसे जानेवाली और तीनों लोकोंकी आभूषणस्वरूपा हैं, आपको बार-बार नमस्कार है। गंगाद्वार, प्रयाग और गंगासागर-संगम—इन तीन विशुद्ध तीर्थस्थानोंमें विराजमान आपको नमस्कार है। क्षमावती आपको नमस्कार है। गार्हपत्य, आहतनीय और दक्षिणाग्निरूप त्रिविध अग्नियोंमें स्थित रहनेवाली तेजोमयी आपको बार-बार नमस्कार है ॥ ७-८ ॥

आप ही अलकनन्दा हैं, आपको नमस्कार है। शिवलिंग धारण करनेवाली आपको नमस्कार है। सुधाधारात्मयी आपको नमस्कार है। जगतमें मुख्य सरित्कारूप आपको नमस्कार है। स्वतीतक्षत्ररूपा आपको

बृहत्यै ते नमस्तेऽस्तु लोकधात्र्यै नमोऽस्तु ते ।
 नमस्ते विश्वमित्रायै नन्दिन्यै ते नमो नमः ॥ १० ॥
 पृथ्व्यै शिवामृतायै च सुवृषायै नमो नमः ॥
 परापरशताढ्यायै तारायै ते नमो नमः ॥ ११ ॥
 पाशजालनिकृन्तिन्यै अधिनायै नमोऽस्तु ते ।
 शान्तायै च वरिष्ठायै वरदायै नमो नमः ॥ १२ ॥
 उग्रायै सुखजगध्यै च सञ्जीवन्यै नमोऽस्तु ते ।
 ब्रह्मिष्ठायै ब्रह्मदायै दुरितघ्न्यै नमो नमः ॥ १३ ॥

नमस्कार है। बृहती नामसे प्रसिद्ध आपको नमस्कार है। लोकोंको धारण करनेवाली आपको नमस्कार है। सम्पूर्ण विश्वके लिये मित्ररूपा आपको नमस्कार है। सबको समृद्धि देकर आनन्दित करनेवाली आपको बारम्बार नमस्कार है ॥ ९-१० ॥

आप पृथ्वीरूपा हैं, आपको नमस्कार है। आपका जल कल्याणमय है और आप उत्तम धर्मस्वरूपा हैं, आपको नमस्कार है, नमस्कार है। बड़े-छोटे सैकड़ों प्राणियोंसे सेवित आपको नमस्कार है। सबको तारनेवाली आपको नमस्कार है, नमस्कार है। संसार-बन्धनका उच्छेद करनेवाली अद्वैतरूपा आपको नमस्कार है। आप परम शान्त, सर्वश्रेष्ठ तथा मनोवांछित वर देनेवाली हैं, आपको बारम्बार नमस्कार है ॥ ११-१२ ॥

आप प्रलयकालमें उग्ररूपा हैं, अन्य समयमें सदा मुखका भोग करानेवाली हैं तथा उत्तम जीवन प्रदान करनेवाली हैं, आपको नमस्कार है। आप ब्रह्मनिष्ठ, ब्रह्मज्ञान देनेवाली तथा पापोंका नाश करनेवाली हैं,

प्रणतार्तिप्रभञ्जिन्यै जगन्मात्रे नमोऽस्तु ते ।
 सर्वापत्प्रतिपक्षायै मङ्गलायै नमो नमः ॥ १४ ॥
 शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
 सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १५ ॥
 निर्लेपायै दुर्गहन्त्र्यै दक्षायै ते नमो नमः ।
 परापरपरायै च गङ्गे निर्वाणदायिनि ॥ १६ ॥
 गङ्गे ममाग्रतो भूया गङ्गे मे तिष्ठ पृष्ठतः ।
 गङ्गे मे पार्श्वयोरेधि गङ्गे त्वव्यस्तु मे स्थितिः ॥ १७ ॥
 आदौ त्वमन्ते मध्ये च सर्वं त्वं गाङ्गते शिवे ।
 त्वमेव मूलप्रकृतिस्त्वं पुमान् पर एव हि ।
 गङ्गे त्वं परमात्मा च शिवस्तुभ्यं नमः शिवे ॥ १८ ॥

आपको बार-बार नमस्कार है । प्रणतजनोंकी पीड़ाका नाश करनेवाली जगन्माता आपको नमस्कार है । आप समस्त विपत्तियोंकी शत्रुभूता तथा सबके लिये मंगलस्वरूपा हैं, आपके लिये बार-बार नमस्कार है ॥ १३-१४ ॥

शरणागतों, दीनों तथा पीड़ितोंको इसमें संलग्न रहनेवाली और सबको पीड़ा दूर करनेवाली देवि नारायणि ! आपको नमस्कार है । आप पाप-ताप अथवा अविद्यारूपा मलसे निर्लिप्त, दुर्गम दुःखका नाश करनेवाली तथा दक्ष हैं, आपको बारम्बार नमस्कार है । आप पर और अपर सबसे परे हैं । मोक्षदायिनी गंगे ! आपको नमस्कार है ॥ १५-१६ ॥

गंगे ! आप मेरे आगे हों, गंगे । आप मेरे पीछे रहें, गंगे । आप मेरे उभयपार्श्वमें स्थित हों तथा गंगे । मेरी आपमें ही स्थिति ही । आकाशगामिनी कल्याणमयी गंगे । आदि, मध्य और अन्तमें सर्वत्र आप हैं । गंगे । आप ही मूलप्रकृति हैं, आप ही परम पुरुष हैं तथा आप ही परमात्मा शिव हैं, शिवे । आपको नमस्कार है ॥ १७-१८ ॥

य इदं पठते स्तोत्रं शृणुयाच्छ्रद्धयाऽपि यः ।
 दशधा मुच्यते पापैः* कायवाक्चित्तसम्भवैः ॥ १९ ॥
 रोगस्थो रोगतो मुच्येद्विपद्भ्यश्च विपद्यतः ।
 मुच्यते बन्धनाद् बद्धो भीतो भीतेः प्रमुच्यते ॥ २० ॥
 सर्वान्कामानवाप्नोति प्रेत्य च त्रिदिवं व्रजेत् ।
 दिव्यं विमानमारुह्य दिव्यस्त्रीपरिवीजितः ॥ २१ ॥
 गृहेऽपि लिखितं यस्य सदा तिष्ठति धारितम् ।
 नाग्निचौरभयं तस्य न सर्पादिभयं क्वचित् ॥ २२ ॥

जो श्रद्धापूर्वक इस स्तोत्रको पढ़ता और सुनता है; वह मन, वाणी और शरीरद्वारा होनेवाले दस प्रकारके पापोंसे मुक्त हो जाता है। रोगी रोगमें तथा विपत्तिग्रस्त विपत्तियोंसे मुक्त हो जाता है, बन्धनमें पड़ा हुआ बन्धनमुक्त हो जाता है और भयभीत व्यक्ति भयसे विमुक्त हो जाता है। वह इहलोकमें सभी कामनाओंको प्राप्ति कर लेता है और मृत्युके अनन्तर दिव्यांगनाओंसे सेवित होता हुआ दिव्य विमानमें आरूढ़ होकर स्वर्गलोकको जाता है ॥ १९—२१ ॥

यह स्तोत्र जिसके घरमें लिखकर रखा हुआ हो, उसे कभी अग्नि, चोर और सर्प आदिका भय नहीं होता ॥ २२ ॥

* अदृशानामुच्छदानं त्रिधा चैवाकथयन्तः ॥

पादाशेषसंज्ञा च, त्रिगुणिकं त्रिविधं स्मृतम् । प्रारुष्यमन्त्रं चैव पौरुषं चैव सर्वशः ॥
 अंसम्बद्धपलायश्च ब्राह्मणं-स्त्राञ्चतुर्विधम् । षड्रथेष्वभिधानं भक्त्यातिव्यभिचरम् ॥
 त्रिदशामिनिर्विशेषं ज्ञानसं त्रिविधं स्मृतम् ।

विना वी हुई चतुर्की लीजा, त्रिविध हिंसा, परस्त्रीभ्रम—यह तीन प्रकारका शैतिक पाप माना गया है। कर्तार कर्मा निकालना, छद्म सेवना सब और तुरली करना और अट-सट बातें बकना—ये वाणीसे होनेवाले चार प्रकारके पाप हैं। दुस्मोक, अन्कों लेनेका विद्या करना, मक्के दूधमेंका कुछ मीनस और बसन्त वस्तुओंमें प्रायत रखना—ये तीन प्रकारके मानसिक पाप कहे गये हैं।

ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशमीहस्तसंयुता ।
 संहरेत् त्रिविधं पापं बुधवारेण संयुता ॥ २३ ॥
 तस्यां दशम्यापेतच्च स्तोत्रं गङ्गाजले स्थितः ।
 यः पठेद्दशकृत्वस्तु दरिद्रो वापि चाक्षमः ॥ २४ ॥
 सोऽपि तत्फलमाप्नोति गङ्गां सम्पूज्य यत्नतः ॥ २५ ॥
 ॥ इति श्रीस्कन्दमहापुराणे काशीखण्डे ईश्वरकथितं गङ्गादशहरास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

५२—गङ्गास्तुतिः

मुनिवचन

मातस्त्वं परमासि शक्तिरतुला सर्वाश्रया पावनी
 लोकानां सुखमोक्षदाखिलजगत्संबन्धपादाम्बुजा ।

ज्येष्ठमासके शुक्लपक्षमें हस्त नक्षत्रसहित दशमी तिथिका यदि बुधवारसं योग हो, तो उस दिन गंगाजीके जलमें खड़े होकर जो दस बार इस स्तोत्रका पाठ करता है, वह दरिद्र हो या असमर्थ, वह भी उसी फलको प्राप्त होता है, जो यथोक्त विधिसे यत्नपूर्वक गंगाजीकी पूजा करनेपर उपलब्ध होनेवाला बताया गया है ॥ २३—२५ ॥

॥ इति प्रकार श्रीस्कन्दमहापुराणके अन्तर्गत काशीखण्डमें ईश्वरकथित गंगादशहरास्तोत्र सम्पूर्ण हुआ ॥

अह्नुमुनि बोले—माता! आप सर्वश्रेष्ठ, अतुलनीया पराशक्ति, सर्वाश्रयदात्री, लोगोंको पवित्र करनेवाली, आनन्द और मोक्षको प्रदान करनेवाली तथा सम्पूर्ण जगत्द्वारा वन्दित चरणकमलवाली हैं ।

न त्वां वेद विधिर्न वा स्मररिपुर्नो वा हरिनीपरे
 सज्जानन्ति शिवे महेशशिरसा मान्ये कथं वेदम्यहम् ॥ १ ॥
 किं तेऽहं प्रवदामि रूपचरितं यच्चेतसो दुर्गमं
 पारावारविवर्जितं सुरधुनी ब्रह्मादिभिः पूजिता।
 स्वेच्छाचारिणि संवितत्य करुणां स्वीयेगुणैर्षा शिवे
 पुण्यं त्वं तु कृतागसं शरणागं गङ्गे क्षमस्वाम्बिके ॥ २ ॥
 धन्यं मे ध्रुवि जन्म कर्म च तथा धन्यं तपो दुष्करं
 धन्यं मे नयनं यतस्त्रिनयनाराध्या दुशालोक्तये।
 धन्यं मत्करवुग्मकं तव जलं स्पृष्टं यतस्तेन वै
 धन्यं मत्तनुरप्यहो तव जलं तस्मिन्यतः सङ्गतम् ॥ ३ ॥

आपको ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश (तत्त्वतः) नहीं जानते तथा अन्य
 लोग भी नहीं जानते। भगवान् शिवके सम्सकसे सम्मानित शिवे।
 फिर मैं आपको कैसे जान सकता हूँ ॥ १ ॥

मैं आपके अचिन्त्य और अपार रूप तथा अरित्रका क्या वर्णन
 करूँ? ब्रह्मादि देवताओंके द्वारा पूजित आप सुरनदीके रूपमें प्रतिष्ठित
 हैं। स्वतन्त्ररूपसे विचरण करनेवाली शिवे। मातः। आप अपने शुभ
 गुणोंसे पुण्य तथा करुणाका विस्तार करके मुझे कृतापराध और
 शरणागतकी क्षमा कीजिये ॥ २ ॥

मेरा इस पृथ्वीपर जन्म और कर्म दोनों धन्य हुए, मेरी कठिन
 तपस्या धन्य हुई तथा मेरे से दोनों नेत्र भी धन्य हुए। जो त्रिलोचन
 भगवान् शंकरकी आराध्या आपका मैं अपने नेत्रोंसे दयान कर रहा
 हूँ। आपके जलके स्पर्शसे वे मेरे दोनों हाथ धन्य हो गये, और यह
 मेरा शरीर भी धन्य हुआ, जिसमें आपका पावन जल गया है ॥ ३ ॥

नमस्ते पापसंहर्त्रि हरमालिविराजिते ।
 नमस्ते सर्वलोकानां हिताय धरणीगते ॥ ४ ॥
 स्वर्गायवर्गदे देवि गङ्गे पतितपावनि ।
 त्वामहं शरणं यातः प्रसन्ना मां समुद्धर ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीमहाभागवते महापुराणे जह्नुमुनिवृत्ता गङ्गाम्नुक्तिः सम्पूर्णा ॥

५३ — गंगा-स्तुति

जय जय भगीरथनन्दिनि, मुनि-चय चक्रोर-चन्दिनि,
 नर-नाग-बिबुध-बन्दिनि जय जह्नु बालिका ।
 बिम्बु-पद-सरोजजासि, ईस-सोसपर बिभासि,
 त्रिपथगासि, पुन्यरासि, पाप-छालिका ॥ १ ॥

पापोंका संहार करनेवाली, भगवान् शंकरके मस्तकपर विराजमान तथा सभी प्राणियोंके हितके लिये पृथ्वीपर अवतीर्ण आपको नमस्कार है, नमस्कार है। देवी गंगे आप स्वर्ग और मोक्ष देनेवाली हैं पतितोंका पावत्र करनेवाली हैं, मैं आपको शरणों है, आप मुझपर प्रसन्न होकर मेरा उद्धार कीजिये ॥ ४-५ ॥

॥ इस प्रकार श्रीमहाभागवतमहापुराणके अन्तर्गते जह्नुमुनिद्वारा की गयी गंगा-स्तुति सम्पूर्ण हुई ॥

हे भगीरथनन्दिनी! तुम्हारे जय हो, जय हो। तुम मुनियोंके समूहकी चक्रोरोंके लिये चन्द्रिकारूप हो। मनुष्य नाग और देवत तुम्हारा वन्दन करते हैं। हे जह्नुकी पुत्री! तुम्हारे जय हो। तुम भगवान् शिवाके चणकमलसे उत्पन्न हुई हो; शिवजीके मणिकपर शोभा पाती हो; स्वर्ग, धूमि और मानाल—इन तीन मनोंसे तीन धाराओंमें होकर बहती हो। गुण्योंकी राक्षि और पापोंकी भानवाली हो ॥ १ ॥

विमल विपुल बहसि द्यारि, शीतल त्रयताप-हारि,
 भँवर वर विभंगतर तरंग-मालिका।
 पुरजन पूजोपहार, सोधित ससि धवलधार,
 भंजन भव-भार, भक्ति-कल्पथालिका ॥ २ ॥
 निज तटव्यासी बिहंग, जल-धर-चर पशु पतंग,
 कीट, जटिल तापस सब सरिस पालिका।
 तुलसी तब तीर तीर सुमिरत रघुवंस-बीर,
 विचरत मति देहि मोह-महिष-कालिका ॥ ३ ॥

(विन्द-गात्रका)

तुम अगाध निर्मल जलको धारण किये हो, वह जल शीतल और तीनों तापोंको हरनेवाला है। तुम सुन्दर भँवर और अनिचंचल तरंगोंकी माला धारण किये हो। नगर-निवासियोंने पूजाके समय जो सामग्रियाँ भेंट चढ़ायां हैं, उनसे तुम्हारी चन्द्रमाके समान धवल धारा शोभित हो गयी है। वह धारा संसारके जन्म मरणरूप धारका दाश करनेवाली तथा भक्तिरूपी कल्पवृक्षकी रक्षाके लिये धारकरूप्य है ॥ ३ ॥

तुम अपने तीरपर रहनेवाले पशु, जलचर, धलचर, पशु, पतंग, कीट और जटाधारी लपखी आदि सबका समानभावसे चालन करती हो। हे मादरूपी महिषामरको मारनेके लिये कालिकारूप्य गंगाजी! मुझ तुलसीदासको गंगी बुद्धि दो कि जिसमें वह श्रीरघुनाथजीका स्मरण करता हुआ तुम्हारे तीरपर विचर कर ॥ ३ ॥

श्रीयमुनास्तोत्राणि

५४— श्रीयमुनाष्टकम्

मुरारिकायकालिमाललामवारिधारिणी

तृणीकृतत्रिविष्टपा त्रिलोकशोकहारिणी ।

मनोऽनुकूलकूलकुञ्जपुञ्जधृतदुर्मदा

धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ १ ॥

मलापहारिवारिपूरभूरिमण्डितामृता

भृशं प्रपातकप्रवञ्चनातिपण्डितानिशाम् ।

सुनन्दनन्दनाङ्गसङ्गरागरञ्जिता हिता । धुनोतु ० ॥ २ ॥

लसत्तरङ्गसङ्गधूतभूतजातपातका

नर्वानमाधुरीधुरीणभक्तिजातचातका ।

जो भगवान् कृष्णचन्द्रके अंगांकी मालिमा लिये हुए मनोहर जलौश्र धारण करती हैं, त्रिभुवनका शोक हरनेवाली होनेके कारण स्वर्गलोकको तृणके समान सारहीन समझती है, जिसके मनोरम तटपर निकुंजीका पुंज वर्तमान है, जो लोगोंका दुर्मद दूर कर देता है वह कालिन्दी यमुना सदा हमारे आन्तरिक मलको धोवे ॥ १ ॥

जो मलापहारी मलिलसमूहस अत्यन्त सुगन्धित है, मुक्तिदायक है, सदा ही बड़े-बड़े पातकोंको लूट लेनेमें अत्यन्त प्रवीण है, सुन्दर चन्दनन्दनके अंगस्पर्शजानत रागसे रंजित है, सबका हितकारिणी है, वह कालिन्दी यमुना सदा हमारे आन्तरिक मलको धोवे । २

जो अपनी लुहावनी तरंगोंके सन्धकेसे सनस्त प्राणियोंके पापोंको भी धोखती है, जिसके तटपर नूतन मधुरिमालो भरे भक्तिरसके अनेकों चातक रहा करते हैं, तटके समाप धाम करनेवाली भक्तवती हंसोत्से

तटान्तवासदासहंससंसृता हि कामदा । धुनोतु० ॥ ३ ॥

विहाररासखंदभेदधीरतीरमारुता

गता गिरामगोचरे चदीयनीरचारुता ।

प्रवाहसाहचर्यपूतमेदिनीनदीनदा । धुनोतु० ॥ ४ ॥

तरङ्गसङ्गसैकताञ्चितान्तरा सदासिता

शरनिशाकरांशुमञ्जुमञ्जरीसथाजिता ।

भवार्चनाय चारुणाम्बुनाथुना विशारदा । धुनोतु० ॥ ५ ॥

जलान्तकेलिकारिचारुगाधिकाङ्गगिणी

स्वभर्तुरन्यदुर्लभाङ्गसङ्गतांशभागिनी ।

स्वदत्तसुप्तसप्तसिन्धुभेदनातिकोविदा । धुनोतु० ॥ ६ ॥

जो सजिल रहती है और इनकी कापनाओंको पप धरनेवाला है; वह कलिन्द-कन्या यमुना सदा हमारे मानसिक मलको मिटावे ॥ ३ ॥

जिसके तटपर विहार और गन निगामके सुन्दको मिटा देनेवाली मन्द-मन्द वाय चल रही है, जिसके तीरकी सुन्दरताका चाणीद्वारा ज्ञान नहीं हो सकता जो अरुं जबकि महावागसे पृथ्वी, नदी और नलोंको गावन बनाती है, वह कलिन्दरिन्दरी यमुना सदा हमारे मानसिक मलको दूर करे ॥ ४ ॥

सहरोमें सुम्भकित बालुकानय तटस जिसका मध्यभाग सुशोभित है, जिसका वर्ण सदा ही श्यामल रहता है, जो शरद् ऋतुके चन्द्रमाकी किरणमयी मनोहर मंजरीसे अलंकृत होती है और सुन्दर सजिलसे सनसकी बनीष देनेमें जो कुशल है, वह कलिन्द कन्या यमुना सदा हमारे मानसिक मलको नष्ट करे ॥ ५ ॥

जो जलके भीतर कौडा करनेवाली सुन्दरी राधाके आगरामसे युक्त है, अपने स्नायो शोकृष्णके अंगस्पर्शमुखका, जो अन्य किसीके

जलच्युताच्युताङ्गरागलम्पटालिशालिनी

विलोलराधिकाकचान्तचम्पकालिमालिनी ।

सदावगाहनावतीर्णभर्तृभृत्यनारदा । धुनोतु० ॥ ७ ॥

सदैव नन्दनन्दकेलिशालिकुञ्जमञ्जुला

तटोत्थफुल्लमल्लिकाकदम्बरेणुसूञ्जला ।

जलावगाहिनां नृणां भवाब्धिसिन्धुपारदा । धुनोतु० ॥ ८ ॥

॥ इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचितं श्रीयमुनाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

लिये दुर्लभ है, उपभोग करती है, जो अपने प्रवाहसे प्रशान्त सप्तसमुद्रोंमें हलचल पैदा करनेमें अत्यन्त कुशल है; वह कालिन्दी यमुना सदा हमारे आन्तरिक मलको धोवे ॥ ६ ॥

जलमें धूलकर गिरे हुए श्रीकृष्णके अंगरागसे अपना अंगस्नान करती हुई सखियोंसे जिसकी शोभा बढ़ रही है, जो राधाकी चंचल अलकोंमें गुँथी हुई चम्पक-मालासे मालाधारिणी हो गयी हैं, स्वामी श्रीकृष्णके भृत्य नारद आदि जिसमें मदा ही स्नान करनेके लिये आया करते हैं, वह कालिन्द-कन्या यमुना सदा हमारे आन्तरिक मलको धो डाले ॥ ७ ॥

जिसके तटवर्ती मंजुल निकुंज सदा ही नन्दनन्दन श्रीकृष्णकी लीलाओंसे मुशोभित होते हैं; किनारेपर बढ़कर खिली हुई मल्लिका और कदम्बके पुष्प-परागसे जिसका वर्ण उज्ज्वल हो रहा है, जो अपने जलमें डुबकर लगानेवाले मनुष्योंके भवसागरसे पार कर देती हैं, वह कालिन्द-कन्या यमुना सदा हमारे मानसिक मलको दूर बहावे ॥ ८ ॥

॥ इस प्रकार श्रीमत् शंकराचार्यविरचिते श्रीयमुनाष्टके सम्पूर्णं हुआ ॥

५५ — श्रीयमुनाष्टकम्

कृपापारावारां तपनतन्त्रां तापशमनीं
 मुरारिप्रेयस्कां भवभयदवां भक्तवरदाम् ।
 वियन्जालान्मुक्तां श्रियमपि सुखाप्तैः प्रतिदिनं
 सदा धीरो नूनं भजति यमुनां नित्यफलदाम् ॥ १ ॥
 मधुवनधारिणि भास्करवाहिनि जाह्नविसङ्घिनि सिन्धुमुते
 मधुरिपुभूषिणि माधवतोषिणि गोकुलभीतिविनाशकृते ।
 जगदघमोचिनि मानसदायिनि केशवकेलिनिदानगते
 जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सङ्कटनाशिनि पावय माम् ॥ २ ॥
 अवि मधुरे मधुमोदविलासिनि शैलविहारिणि वेगभरे
 परिजनपालिनि दुष्टनिषूदिनि वाञ्छितकामविलासधरे ।

जो कृपाकी समुद्र, सूर्यकुमारी, तापको शान्त करनेवाली, श्रीकृष्णचन्द्रको प्रेमिका, संसारभीतिके लिये दावानलस्वरूप, भक्तोंको धर देनेवाली और आकाशजात्ममे मुक्त लक्ष्मीस्वरूपा हैं, उन नित्यफलदायिनी यमुनाजीका धीर पुरुष सुखप्राप्तिके लिये निश्चयपूर्वक निरन्तर प्रतिदिन भजन करता है ॥ १ ॥

हे मधुवनमें विहार करनेवाली ! हे भास्करवाहिनि ! हे गंगाजीकी महनरी ! हे सिन्धुमुते ! हे श्रीमधुसूदनविभूषिणि । हे माधवतृप्तिकारिणि हे गोकुलका भय दूर करनेवाली ! हे जगत्पार्श्वनाशिनि ! हे वाञ्छितकलनाशिनि ! हे कृष्णकेशिकी आश्रयभूता सकलभयानिवारिणीं संकटनाशिनी यमुने ! तुम्हारा जय हो ! जय हो : तुम मुझे पवित्र करो ॥ २ ॥

अर्थ मधुरे । अवि मधुमोदविलासिनि । हे ज्वलंतमें विहार करनेवाली । गरम जंगलमें, जमने लगेवती भक्तजनोंका पालन करनेवाली, दुष्टोंका संहार करनेवाली, ईच्छित कामनाओंकी विलासभूमि

ब्रजपुरवासिजनार्जितपातकहारिणि विश्वजनोद्धारिके । जय० ॥ ३ ॥

अनिविपदम्बुधिमग्नजनं भवताप्रशताकुलमानसकं

गतिमतिहीनमशेषभयाकुलमागतपादसरोजयुगम् ।

ऋणभयभीतिमनिष्कृतिपातककोटिशलायुतपुञ्जतरम् । जय० ॥ ४ ॥

नवजलदद्युतिकोटिलसत्तनुहेमपद्मभरगञ्जितके

त्तडिदवहेलिपदाञ्चलचञ्चलशोभितपीतसुचैलधरे ।

मणिमयभूषणचित्रपटासनरञ्जितगञ्जितभानुकरे । जय० ॥ ५ ॥

ब्रजभूमिनिवासिनोंके अर्जित पापोंका हरण करनेवाली तथा सम्पूर्ण जीवोंका उद्धार करनेवाली, सकलभयनिवारिणी संकटनाशिनी यमुने! तुम्हारी जय हो! जय हो! तुम मुझे याद दिला करो ॥ ३ ॥

जो महान् विपत्तिमागरमें निमग्न है, सैकड़ों सांसारिक संतापोंसे जिसका मन व्याकुल है, जो गति (आश्रय) और मति (विचार)-से शून्य तथा सब प्रकारके भयोंसे व्याकुल है, जो ऋण और भयसे दबा हुआ तथा सैकड़ों-हजारों-करोड़ों प्रतिकारशून्य पापोंका पुतला है, तुम्हारे चरणकमल-युगलमें प्राप्त हुए, ऐसे मुझको, हे सकलभयनिवारिणी संकटनाशिनी यमुने! तुम्हारी जय हो। जय हो। तुम मुझे याद दिला करो ॥ ४ ॥

तुम्हारे शरीर करोड़ों नवीन मण्डलोंका कान्तिसे सुशोभित तथा सुवर्णमय आभूषणोंसे विभूषित है, जिसका चंचल अचल तपलाकी भी अवहेलना करता है, ऐसे पीत दुकूलको धारण करके तुम परम शोभायमय हो रही हो तथा मणिमय आभूषण और चित्र-त्रिचित्र वस्त्र एवं आसनसे रंजित होकर तुमने सूर्यकी किरणोंको भी कुण्ठित कर दिया है; हे सकल भयनिवारिणी संकटहारिणी यमुने! तुम्हारी जय हो, जय हो। तुम मुझे याद दिला करो ॥ ५ ॥

शुभपुलिने मधुमत्तयदुद्धवरासमहोत्सवकंलिभरे
 उच्चकुलाचलराजितमौक्तिकहारमयाभररोदसिके ।
 नवमणिकोटिकभास्करकञ्चुकिशोभिततारकहारद्युते । जय० ॥ ६ ॥
 करिवरमौक्तिकनासिकभूषणवातचमत्कृतचञ्चलके
 मुखकमलामलसौरभचञ्चलमत्तमधुन्नतलोचनिके ।
 मणिगणकुण्डललोलपरिस्फुरदाकुलगण्डयुगामलके । जय० ॥ ७ ॥
 कलरवनूपुरहेनमवाचितपादसरोरुहसारुणिके
 धिमिधिमिधिमिधिमितालविनोदितमानसमञ्जुलपादगते ।
 तव पदपङ्कजमाश्रितमानवचित्तसदाखिलतापहरे । जय० ॥ ८ ॥

हे सुन्दर तटीवाली। हे मधुमत्त-यदुकुलोत्पन्न श्रीकृष्ण और
 अलरामकं गममहोत्सवकी क्रीडाधूमि! हे ऊँचे-ऊँचे कुलगवंतोंकी
 श्रीणियोंपर शोभायमान मुक्ताखनारूप आभूषणोंमें पृथ्वी और आकाशको
 विभूषित करनेवाली, हे करोड़ों भास्करोंके समान नवौन मणियोंकी
 कंचुकीसे सुशोभित तथा तारावलीरूप हाथमें युक्त, सकलभयनिवारिणी
 संकटहारिणी यमुने! तुम्हाते जय हो, जय हो! तुम मुझे पवित्र करो ॥ ६ ॥

तुम्हारी नासिकाकी भूषणरूप गजमुक्ता वायुसे बचल होकर
 झिलमिला रही है, तुम्हारे नेत्ररूप मनवाले भौंर मानो मुखकमलकी
 सुवामसे नंचल हो रहे हैं तथा दोनों अग्न कपोल हिलते हुए मणिमय
 कुण्डलोंकी झलकमें झिलमिला रहे हैं, हे सकलभयनिवारिणी संकटहारिणी
 यमुने! तुम्हारी जय हो, जय हो! तुम मुझे पवित्र करो ॥ ७ ॥

तुम्हारे अल्प चरणकमल सुदृगंमय नूपुरोंके कलरवमें युक्त हैं,
 तुम मनको प्रसन्न करनेवाली 'धिमि धिमि' स्वरमयी मनाहर गीतमें
 गमन करती हो, जो मनुष्य तुम्हारे चरणकमलोंमें चित लगाता है,
 तुम उसके सम्पूर्ण त्रास हर लेती हो: हे सकलभयान्त्वारिणी संकटहारिणी
 यमुने, तुम्हारी जय हो! जय हो! तुम मुझे पवित्र करो ॥ ८ ॥

भवोत्तापाम्भोधौ निपतितजनो दुर्गतियुतो

यदि स्तौति प्रातः प्रतिदिनमनन्याश्रवतया ।

ह्याह्वैः कामं करकुसुमपुञ्जैरविस्तं

सदा भोक्ता भोगान्मरणसमये याति हरिताम् ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचितं श्रीयमुनाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

५६ — श्रीयमुनाष्टकम्

नमामि यमुनामहं सकलसिद्धिहेतुं मुदा

मुरारिपदपङ्कजस्फुरदमन्दरेणूत्कटाम् ।

तटस्थनवकाननप्रकटमोदपुष्पाम्बुना

सुरासुरसुपूजितस्मरपितुः श्रियं विभ्रतीम् ॥ १ ॥

जो मनुष्य संसारके सन्तापननुद्घनें डूबकर अत्यन्त दुर्गतिग्रस्त हो रहा है, वह यदि प्रतिदिन प्रातःकाल अनन्यचित्तमे (इस स्तोत्रद्वारा श्रीयमुनाजीको) स्तुति करेगा, वह (यात्राजोवन) घौड़ीको दिनहिनाहद तथा हाथोंमें पुष्पपुंजसे सुशोभित होकर, निरन्तर सम्पूर्ण भोगोंको भोगेगा और मरनेके समय भगवद्भूष हो जायेगा ॥ १ ॥

॥ इति प्रकारेण श्रीमत् शंकराचार्यविरचितं श्रीयमुनाष्टकं सम्पूर्णं भूजते ॥

मैं सम्पूर्ण सिद्धियोंको हेतुभूता श्रीयमुनाजीको मानन्द मनस्वतार करता हूँ, जो भगवान् नुगरिके चरणारविन्दोंको चमकीला और अमन्द महिमवालों धूल धारण करनेमें अत्यन्त उत्कर्षको प्राप्त हुई हैं और तटवर्ती नूनन कानोंके मुर्गाश्रित पुष्पोंमें सुवासिन उलगाशिके द्वारा देवदानववन्दित प्रद्युम्नायिता भगवान् श्रीकृष्णकी श्याम मुपमाओं धारण करती हैं ॥ १ ॥

कलिन्दगिगिप्रस्तके पतटमन्दपृगंज्वला
 विलामगपनात्सप्तप्रकटगण्डशैलान्तरा ।

सधाप्रगतिदन्तुग सधाधिरुद्वदालोनभा
 मुकुन्दरतिवर्द्धिनी जयति पद्मबन्धाः सुता ॥ २ ॥

भुवं भुवनपावनोमधिगतामनेकस्वनेः
 प्रियाधिरिव संविता शुक्रमयूरहंसादिभिः ।

तरुङ्गभुजकङ्कणाप्रकटमुक्तिकावास्तुका
 नितम्बतटमन्दुर्गं नमन कृष्णात्पूर्यप्रियाम् ॥ ३ ॥

शुक्रमयूरहंसादिभिः प्रियाधिरिव संविता शुक्रमयूरहंसादिभिः ।
 भुवं भुवनपावनोमधिगतामनेकस्वनेः प्रियाधिरिव संविता शुक्रमयूरहंसादिभिः ।
 मुकुन्दरतिवर्द्धिनी जयति पद्मबन्धाः सुता ॥ २ ॥
 कलिन्दगिगिप्रस्तके पतटमन्दपृगंज्वला विलामगपनात्सप्तप्रकटगण्डशैलान्तरा ।
 सधाप्रगतिदन्तुग सधाधिरुद्वदालोनभा मुकुन्दरतिवर्द्धिनी जयति पद्मबन्धाः सुता ॥ २ ॥
 भुवं भुवनपावनोमधिगतामनेकस्वनेः प्रियाधिरिव संविता शुक्रमयूरहंसादिभिः ।
 तरुङ्गभुजकङ्कणाप्रकटमुक्तिकावास्तुका नितम्बतटमन्दुर्गं नमन कृष्णात्पूर्यप्रियाम् ॥ ३ ॥

...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...

अनन्नगुणभूषितं शिवविर्गञ्जदेवस्तुनं
 घनाघननिधे मदा ध्रुवपगशरार्थाष्टदे ।

विशुद्धमथुगतटे सकलगोपगोपीवृते

कृपाजलधिसंश्रिते मम मनः सुखे भावय ॥ ४ ॥

यथा चरणपद्मजा मुरगिपोः प्रियम्भावुका

समागमनतां ऽभवन् सकलमिच्छिदा संवताम् ।

तथा सदृशतामियात् कमलजा सपत्नीव यद्धरि-

प्रियकलिन्दया मनसि मे सटा स्थीयताम् ॥ ५ ॥

शिव नमन इम अनन्न गुणसे विधान हा शिव ओ जडा
 गार्दि देवता मफारी म्नुनि करने हैं । मंदाको गार्धोर म्मुजे ममन
 तुम्हारी शमकानन यद स्थान है । ध्रुव और पगशर गैरी
 भक्त इवांन गुन अभाए उरन् पूदान जलवेताला हो तुम्हारे नटाए
 विशुद्ध मथुगपुरे मशीरुत है ममन गोप और गोपमन्दरिगीं नुई
 मं गहनी है । गुन चरुणमममर भागवान श्रीरामके आश्रित हैं ।
 न अन्व कलाव नदी पनीओ ॥ ४ ॥

गाम्वा गिणुं न ममनान्दरी चक्रे हृद गण विनय म्मासव
 काले मं शमनादिसे प्रुन नु भार ममन मवरीके : १२ अथुण
 निर्दिष्टावै अयवता न मरी न म्मुन जावै नमना अवेन ताश्मजी
 कर मजो है ॥ १३ ॥ न न न न मन्वारा पदुता । अय मन्वरागाम
 शरुणमपुण ता न्दरान्दन म्माए अन् मं म्माये निवास करे ॥ ५ ॥

नमोऽम्नु यमूनं सदा तव चाग्निमत्यद्भुतं

न जानु यमयातना भवति नै पयःपानतः ।

यसोऽयि भगिनीमृतान् कथमु हन्ति दृष्टानपि

प्रिया भवति मेवनात् तव हंग्यथा गोपिकाः ॥ ६ ॥

ममाम्नु तव सान्निधो तनुवत्वमेतावता

न दुर्लभतमा गतिर्मुग्गिणौ मुकुन्दप्रिये ।

अतोऽम्नु तव लालना सुरधुनी परं सङ्गमात्

नरेव भूवि कीर्तिता न नु कदापि पुष्टिस्थितः ॥ ७ ॥

स्तुतिं तव करोति कः कमलजामर्षालि प्रिये

हंग्यदनुमेवया भवति मौख्यमामोक्षतः ।

यमुन । वृन्द लटा ललकन दे नमना चाग्ने अत्यन्त सुदृढा
है । ललकन कम गतिसे कती ममयातना नती भावती प्रकृता है । अथवा
गतिनक हूँ हूँ तव नो ही ममयातन इत् नरे मे मार मकत ह ।
मत्तान मताम मकुन्द गोपमनाश्रमो भवति अयामस्तुन्दर श्रीकृष्णका
प्रिय ही प्रकृता है ॥ ६ ॥

श्रीकृष्णार्जुन युद्धे । युद्धे अतोऽम्नु तव सान्निधो तनुवत्वमेतावता
मुने नतन शरण भवति कर्मका अथवा मिते । इत्यपि तव मुना
श्रीकृष्णम यथाह अनया दुर्लभ नही म नती, अत दुर्लभ प्रकृति
नरे हूँ प्रकृता नती म—नमको लड लड्या अत नमस
मितनता कृष्ण नो नमसो मता इत भुक्तमपि मन्वता यथायं मती
है मते गुणमानीर अथवा नमसो नमसक अत अथवा मताका
अथो हूँ मती का है ॥ ७ ॥

तस्मिन् सान्निधो तनुवत्वमेतावता नतन शरण भवति कर्मका अथवा

नर्मदास्तोत्रम्

५७ — नर्मदास्तुतिः

श्रीमद्भागवतम्

जय भागवति देवि नमो वन्दे जन पार्ष्विनाशिनि बहुफलदं ।
 जय शुष्मनिशुम्भकपालधरे प्रणमामि नु देवनगर्तिहरे ॥ १ ॥
 जय चन्द्रदिवाकर्णेन्द्रधरे जय पावकभूषितत्रक्रवरे ।
 जय धातुदेहनिलीनपरे जय अश्वक्रान्तविशोषकरे ॥ २ ॥
 जय महिषाशिमदिनि शूलकरे जय लोकममन्तकपापहरे ।
 जय देवि पितामहगमनरे जय धार्यकशक्रशिरोऽध्वनरे ॥ ३ ॥

व्यासजी बाले — हे जनार्दिना देवि। हे गणेश। तुम्हारा अर्थ ही।
 १। भागवति देवि नमो वन्दे जन पार्ष्विनाशिनि बहुफलदं ।
 २। जय शुष्मनिशुम्भकपालधरे प्रणमामि नु देवनगर्तिहरे ॥ १ ॥
 ३। जय चन्द्रदिवाकर्णेन्द्रधरे जय पावकभूषितत्रक्रवरे ।
 ४। जय धातुदेहनिलीनपरे जय अश्वक्रान्तविशोषकरे ॥ २ ॥
 ५। जय महिषाशिमदिनि शूलकरे जय लोकममन्तकपापहरे ।
 ६। जय देवि पितामहगमनरे जय धार्यकशक्रशिरोऽध्वनरे ॥ ३ ॥

१। जय भागवति देवि नमो वन्दे जन पार्ष्विनाशिनि बहुफलदं ।
 २। जय शुष्मनिशुम्भकपालधरे प्रणमामि नु देवनगर्तिहरे ॥ १ ॥
 ३। जय चन्द्रदिवाकर्णेन्द्रधरे जय पावकभूषितत्रक्रवरे ।
 ४। जय धातुदेहनिलीनपरे जय अश्वक्रान्तविशोषकरे ॥ २ ॥
 ५। जय महिषाशिमदिनि शूलकरे जय लोकममन्तकपापहरे ।
 ६। जय देवि पितामहगमनरे जय धार्यकशक्रशिरोऽध्वनरे ॥ ३ ॥

१। जय भागवति देवि नमो वन्दे जन पार्ष्विनाशिनि बहुफलदं ।
 २। जय शुष्मनिशुम्भकपालधरे प्रणमामि नु देवनगर्तिहरे ॥ १ ॥
 ३। जय चन्द्रदिवाकर्णेन्द्रधरे जय पावकभूषितत्रक्रवरे ।
 ४। जय धातुदेहनिलीनपरे जय अश्वक्रान्तविशोषकरे ॥ २ ॥
 ५। जय महिषाशिमदिनि शूलकरे जय लोकममन्तकपापहरे ।
 ६। जय देवि पितामहगमनरे जय धार्यकशक्रशिरोऽध्वनरे ॥ ३ ॥

जय गणपत्युमायुधदंशनने जय आगन्नादिनि शम्भुनुने ।
 जय दुःखदग्निर्नाशकं जय पत्रकलत्रविवृद्धिकने ॥ ४ ॥
 जय देवि समस्तशरीरधरे जय नाकविदग्निनि द्युःखहरे ।
 जय वार्धिविनाशिनि पांशुकं जय वाञ्छितज्ञाविनि मिद्धिवो ॥ ५ ॥
 एतद् व्याघकूलं ग्नात्रं य एतेच्छिवसन्निधौ ।
 गृहे वा शुद्धभावेन कामक्रोधविवर्जितः ॥ ६ ॥
 नम्य ज्ञानो भवेत्प्रातः प्रातश्च वृषवाहनः ।
 प्रीता म्यानर्मदा देवी सर्वपापक्षयङ्गी ॥ ७ ॥
 न ते चानि यमारोक्तं यः श्रुत्वा भुवि नमंदा ॥ ८ ॥
 ॥ इति श्रीस्कन्दपुराण महाप्रमाणे नर्मदास्तोत्रे व्याघकूला नमंदास्तोत्रे सम्पूर्णम् ॥



एतद् व्याघकूलं ग्नात्रं य एतेच्छिवसन्निधौ ।
 गृहे वा शुद्धभावेन कामक्रोधविवर्जितः ॥ ६ ॥
 नम्य ज्ञानो भवेत्प्रातः प्रातश्च वृषवाहनः ।
 प्रीता म्यानर्मदा देवी सर्वपापक्षयङ्गी ॥ ७ ॥
 न ते चानि यमारोक्तं यः श्रुत्वा भुवि नमंदा ॥ ८ ॥

... इति श्रीस्कन्दपुराण महाप्रमाणे नर्मदास्तोत्रे व्याघकूला नमंदास्तोत्रे सम्पूर्णम् ॥

... इति श्रीस्कन्दपुराण महाप्रमाणे नर्मदास्तोत्रे व्याघकूला नमंदास्तोत्रे सम्पूर्णम् ॥



५८ — नर्मदाष्टकम्

मविन्दमिन्द्रमृच्छुलनरङ्गभङ्गज्जितं

द्विषत्सु पापज्ञानजातकारिवाग्भियुतम् ।

कृतानादृतकालभृतभोतिहाग्निर्मदे

त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥ १ ॥

त्वदम्बुलानदीनमीनदिव्यमध्रदायकं

कली मलीषभागहारि सर्वतीर्थनायकम् ।

सुमच्छुकच्छुनकृषकृषकृषकृषार्मदे

त्वादीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥ २ ॥

महागभीर्नीरुपगपापधृतभृतलं

ध्वनन्ममस्नपातकारिदागितायदाचलम् ।

मन्त्रक इति कृतानि कृतानि नन्त्रानि भस्त्र १३३ कृतानि
 कृतानि कृतानि कृतानि न भस्त्रानि भस्त्र १३३ कृतानि
 कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि
 कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि
 कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि
 कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि
 कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि
 कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि

कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि
 कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि
 कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि
 कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि
 कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि
 कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि
 कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि

कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि
 कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि
 कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि
 कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि कृतानि

जगत्त्रये महाभये मृकण्डमनुहर्ष्यते
 त्वदीयापादपङ्कजं नमामि देवि नमंदे ॥ ३ ॥
 गतं तदेव मे भवं त्वदप्यर्वाक्षितं यदा
 मृकण्डमनुशौनकासुरागिमेति श्रुत्वा ।
 पुनर्भवाब्धिजन्मजं भवाब्धिदुःखवर्मदं
 त्वदीयापादपङ्कजं नमामि देवि नमंदे ॥ ४ ॥
 अलक्षलक्षविन्नगमगमुगादिपूजितं
 मुलक्षर्त्तारर्थागपक्षिलक्षकृजितम् ।
 वसिष्ठसिष्टपिप्पलादिकदेमादिशर्मदे
 त्वदीयापादपङ्कजं नमामि देवि नमंदे ॥ ५ ॥

नमंदे । अस्मिन् काले जगत्त्रये महाभये मृकण्डमनुहर्ष्यते वा त्वदीयापादपङ्कजं नमामि देवि नमंदे ॥ ३ ॥
 गतं तदेव मे भवं त्वदप्यर्वाक्षितं यदा मृकण्डमनुशौनकासुरागिमेति श्रुत्वा । पुनर्भवाब्धिजन्मजं भवाब्धिदुःखवर्मदं त्वदीयापादपङ्कजं नमामि देवि नमंदे ॥ ४ ॥
 अलक्षलक्षविन्नगमगमुगादिपूजितं मुलक्षर्त्तारर्थागपक्षिलक्षकृजितम् । वसिष्ठसिष्टपिप्पलादिकदेमादिशर्मदे त्वदीयापादपङ्कजं नमामि देवि नमंदे ॥ ५ ॥

भवमायुःकृत्तुःशुद्धसुखमसाकं तन्त्रे सुखेन पदसु सुखमासा इ
 धान्तेन नमंदे । जगत्त्रये महाभये मृकण्डमनुहर्ष्यते वा त्वदीयापादपङ्कजं नमामि देवि नमंदे ॥ ३ ॥
 गतं तदेव मे भवं त्वदप्यर्वाक्षितं यदा मृकण्डमनुशौनकासुरागिमेति श्रुत्वा । पुनर्भवाब्धिजन्मजं भवाब्धिदुःखवर्मदं त्वदीयापादपङ्कजं नमामि देवि नमंदे ॥ ४ ॥
 अलक्षलक्षविन्नगमगमुगादिपूजितं मुलक्षर्त्तारर्थागपक्षिलक्षकृजितम् । वसिष्ठसिष्टपिप्पलादिकदेमादिशर्मदे त्वदीयापादपङ्कजं नमामि देवि नमंदे ॥ ५ ॥

नमंदे । अस्मिन् काले जगत्त्रये महाभये मृकण्डमनुहर्ष्यते वा त्वदीयापादपङ्कजं नमामि देवि नमंदे ॥ ३ ॥
 गतं तदेव मे भवं त्वदप्यर्वाक्षितं यदा मृकण्डमनुशौनकासुरागिमेति श्रुत्वा । पुनर्भवाब्धिजन्मजं भवाब्धिदुःखवर्मदं त्वदीयापादपङ्कजं नमामि देवि नमंदे ॥ ४ ॥
 अलक्षलक्षविन्नगमगमुगादिपूजितं मुलक्षर्त्तारर्थागपक्षिलक्षकृजितम् । वसिष्ठसिष्टपिप्पलादिकदेमादिशर्मदे त्वदीयापादपङ्कजं नमामि देवि नमंदे ॥ ५ ॥

मनकुमारनाचिकेतकश्रधधादिषट्पदै-

धृतं म्बकीयपानसंपु नाम्नादिषट्पदैः ।

रवीन्दुगन्तिदेवदेवगजकर्मशर्मदं

त्वद्दीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥ ६ ॥

अलक्ष्मक्षलक्षपापलक्षमागसायुधं

ततन्नु जीवजन्तुतन्भुक्तिमुक्तिदायकम् ।

विरञ्चिविष्णुशङ्करस्वकीयधामवर्मदे

त्वद्दीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥ ७ ॥

अहंऽमृतं म्यनं श्रुतं महेशकेशजातदे

किरातसूतवाडवेषु पण्डिते शटे नटे ।

पय, चन्द्र, गीन्देव आर इन्देके कर्मीकी विष्णुज समान जरीकाली
ते धारणत नादे। मनकुमार, नाचिकेत कश्यप और नन्द आदि
श्रधधरणा कश्यपादि द्वारा अर्पण इत्येवमे धरणा किंवा एत आषट्क
नमोऽर्पणो मे ॥ ६ ॥ ७ ॥

ब्रह्म, विष्णु तथा शिवका ज्ञाना आख्याते कश्चन धनदत्ता मे
अर्पणत कर्तुं शक्यते न पण्डित न च ब्रह्म तदा ज्ञाना नापि
ब्रह्म किंवा नन्द आदि विष्णुविष्णु आदि महेश महेश्वर आदि
मोक्षो और जीवन्तु त अर्पण नमोऽर्पणो मे ॥ ७ ॥
शिवक नाचिकेत त न कश्यप इति ॥ ७ ॥

अत एवो एत एत न एत कश्चि सक्षो कर्मिणीका कल्याण
एत एत एत न एत एत एत। एतान् शिवके विष्णुश्च चन्द्रा
एतान् एतान् एतान् एतान् एतान् एतान् एतान् एतान् एतान्

दुग्धपापनाशहासिर्वजन्तुशर्मदे

त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नमदे ॥ ८ ॥

इदं तु नमोदाष्टकं त्रिकालमेव च सदा

पठन्ति ते निरन्तरं न यान्ति दुर्गतिं कदा ।

सुलाभ्य देहदुर्लभं महेशधामगौरवं

पुनर्भवा नरा न च विलोकयन्ति रौरवम् ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचिते नमोदाष्टक सम्पूर्णम् ॥

मूलं आरक्षी न भ्रमन्मयो नान-।नानं मुनीषी पद्म अन्तर
नगणकमलरु। मे गधस्वकार करती हैं ॥१०॥

न। नमो नमो नानां नानां । यथा, मध्याह्ना एव ताव च इत
नमोदाष्टकका निरन्तर पठ करी है चे कर्मा जो दुर्गाको प्राप्त नही
होते। यथा च नमो नानां नानां धनुष । स्वर्गं कुरुते । इति श्रीव्यास
विरचिते श्रीमद्भक्तिसुखाश्रयणस्य नामोदाष्टकस्य अष्टकम् ॥ १० ॥

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचिते नमोदाष्टक सम्पूर्णम् ॥

प्रकीर्णस्तोत्राणि

५९ — शीतलाष्टकम्

अस्य शीतलाष्टकस्य सप्तमं च कौण्डिन्यः श्लोकं उच्यते
 गीतम्, देवता लक्ष्मीं वन्दन् भगवता शक्तिः गज-
 विम्फोटकान्भूतानि द्रव विविद्योगः ।

इति १३७

वन्देऽहं शीतलां देवीं रामभग्नां दिगम्बरां ।
 मार्जनीकलशांपितां शृपालङ्कृतमस्तकाम् ॥ १ ॥

वन्देऽहं शीतलां देवीं सर्वगंगभयापहाम् ।
 यामासाद्य निवर्तेत विम्फोटकभयं महत् ॥ २ ॥

इति श्रीशीतलाष्टकं कौण्डिन्यः सप्तमं च कौण्डिन्यः श्लोकं उच्यते, देवता
 शीतला यामा यो न्यु च्छ्याता मशु गं क भग्ना देवी है । यथा
 प्रकृतं विम्फोटक । चन्द्र कौण्डिन्यः - ३ शिव, गंग, कुतु इति स्तोत्रका
 घट्टमं विविद्योग होता है ।

इति श्री शोले — अष्टादश दिगम्बरां विम्बरा इत्यमे यानां
 । शाङ्गे तेषां कलरा भावग वन्देऽहं ली मरुत जलकृत मन्मथला श
 म्पाने गं गंगाम् ये वन्दत भगता है १ ।

ये सभा प्रकृतक ता ताता गंगाम् मत्रा कर्त्तव्यता न्य भाव्यती
 शीतलाके वन्दता वरगा है । तिसीं शम्पामं जलमं विम्फोटक
 । चण्ड । कु च्छी मे प्रहा ता तु ही याना है ॥ २ ॥

श्रीतले श्रीतले चोत यो ब्रूयाद्वाहर्षोडित ।
 विष्फोटकभयं घोरं क्षिप्रं तस्य प्रणश्रवति ॥ ३ ॥
 चम्ब्रामृदकमध्यं नृ धृत्वा पृजवने नरः ।
 विष्फोटकभयं घोरं गृहे तस्य न जायते ॥ ४ ॥
 श्रीतले ज्वराधस्य प्रतिगन्धयुतस्य च ।
 प्रणष्टत्रक्षुषः पुंसस्त्वामाहुर्जीवनीषयम् ॥ ५ ॥
 श्रीतले तनूजान् रोगान्नुषां हृग्मि दुम्यजान् ।
 विष्फोटकविदीर्णानां त्वमेकामृतवर्षिणी ॥ ६ ॥
 गलगण्डग्रहा रोगा ये चान्ये दारुणा नृणाम् ।
 त्वदनुध्यानमात्रेण श्रीतले यान्ति मंक्षयम् ॥ ७ ॥

[चिन्तामणि] ज्वरस्य गौरवञ्च जा त्वांत् 'शाकमे श्रीतले'— रोगा
 उच्चारण करत है उभयका भयजन विष्फोटकनयनतिः यस्य शीघ्र
 ही वाट हा आता है ॥ ३ ॥

जो मनुष्य आपका सौत्माका (हृत्थम) लकड़ कर्तक अन्ध
 विश्व हो आवकी पूजा करत है उभयके परमे विष्फोटक रोगाद
 भाषण भय नान उद— होती है ॥ ४ ॥

ह श्रीतले ज्वरसे शाक्य ज्वरादिकं दुर्गन्धी नृन्त तथा विनष्ट चत्र
 व्यभिचाले मनस्यकं त्रिषु आपकी हा गौरवस्वणी शौर्गांश्च सहा
 गथा है ॥ ५ ॥

ह श्रीतले चम्ब्रामृदकं शरीरमे संनिवासे त्व भस्मक क्रियास्य त्व
 क्रिये सप्त शोभे रोगीका आप हर संतो है एक मन्त्र आप ही विष्फोटक
 नोकरे विदीर्ण नृयुयोक्त तस्य अनुक्ति चत्त करके कला ॥ ६ ॥

ह आपका अनुचरके गत्यादरवाड आदि लक्ष्मी ओह भी चन्ना प्रकाशके
 चै संशय संशय है न आपकी शक्त्यापयमं यथा हा कति है ॥ ७ ॥

न मन्त्रो नौषधं तस्य पापगंगस्य विद्युत् ।
 त्वापेकां शीतले धात्रीं मान्यां पश्यामि देवताम् ॥ ८ ॥
 मृणालतन्तुमदृशीं नाधिहन्त्यधर्मस्थिताम् ।
 यस्यां मन्त्रिनयंदेवि तस्य मृत्युर्न जायते ॥ ९ ॥
 अष्टकं शीतलादेव्या यो नरः प्रपठेत्पदा ।
 विष्काटकभयं घोरं गृहे तस्य न जायते ॥ १० ॥
 श्रोतव्यं पठितव्यं च श्रद्धाभक्तिसुपन्वितैः ।
 उपमर्गतिनाशाय परं म्रस्येव नं महत् ॥ ११ ॥
 शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता ।
 शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः ॥ १२ ॥

इस अष्टककर्ता पाप गंगका न कांठे ओगति है और न मन्त्र
 हा है। है शीतले मन्त्रादि आग जगतीका छोड़कर [उस गंगसे
 मुक्ति पावक निवृत्त] मुझे कोई दूसरा देवता नहीं दिखायी देता ॥ ८ ॥

है देवि। जो मृणी मृणाल-तन्तुके समान कोमल स्वभावकी
 और नाभि तथा हृदयके मध्य विराजमान रहनेवाली आग भगवतीका
 ध्यान करने है उसके लिये नहीं है ॥ १० ॥

जो समुद्र भगवती शीतलाके इस अष्टकका विरा पाठ करे
 तो उसके लिये विष्काटकका भी भय नहीं रहता ॥ १० ॥

शीतलाका विरा या अष्टक विराजित है। देवता आ शीतला
 मुक्त करेगी इस लिये कल्पवृक्षकी मृणाली पाठ और श्रद्धा से
 पावक है ॥

न शीतला। इस अष्टकका मन्त्र है है शीतले। शीतला जगन्माता
 शीतला है न शीतले। पाप गंगसे। पापका कर्म लगे है। और
 शीतला। त्वं त्वं जगन्माता है ॥ १२ ॥

गमभो गर्दभश्चैत्र खरो वैशाखनन्दनः ।

शीतलावाहनश्चैव दूर्वाकन्दानकृन्तनः ॥ १३ ॥

एतानि खरनामानि शीतलाग्रै नृ यः पठेत् ।

तस्य गेहे शिशुनां च शीतलारुद्धं न जायते ॥ १४ ॥

शीतलाष्टकमंत्रं न देयं यस्य कस्यचित् ।

दानव्यं च सदा तस्मै श्रद्धाभक्तियुताय वै ॥ १५ ॥

॥ ॐ श्रीसंकटास्तुतिः शीतलाष्टकं सप्तमं ॥

६० — श्रीसंकटास्तुतिः

अथ गिरिनन्दानं वान्द्यमण्डानं प्रियवलिनादिनां वान्द्यपूजे

गिरिवर्गत्रिश्र्याङ्गं र्धनिवर्तमानं विष्णुविन्नामिनि त्रिष्णुने ।

शीतलावाहनश्चैत्र खरो वैशाखनन्दनः शीतलावाहनश्चैत्र
निरुद्धः— । भगवतः शीतलाग्रै जगज्जगत्सर्वनाथोऽपि तत्रैव त्रिषु
कल्पे देवैः उवाच यत्तु कल्पेऽपि शीतलाग्रै नरो हन्ता है ॥ १३ ॥

इति शीतलाष्टकं समाप्तं । ॥ १३ ॥ ॐ श्रीसंकटास्तुतिः शीतलाष्टकं सप्तमं ॥
गिरिवर्गत्रिश्र्याङ्गं र्धनिवर्तमानं विष्णुविन्नामिनि त्रिष्णुने ॥ १५ ॥

॥ ॐ श्रीसंकटास्तुतिः शीतलाष्टकं सप्तमं ॥

शीतलावाहनश्चैत्र खरो वैशाखनन्दनः शीतलावाहनश्चैत्र
निरुद्धः— । भगवतः शीतलाग्रै जगज्जगत्सर्वनाथोऽपि तत्रैव त्रिषु
कल्पे देवैः उवाच यत्तु कल्पेऽपि शीतलाग्रै नरो हन्ता है ॥ १३ ॥

षण्मघनि हे शिनिकुण्डकटुध्वनि भृत्कुटुध्वनि भृत्कृत्ते
 जय जय हे मन्त्रिषामुग्मर्दिनि ग्यकपर्दिनि शंलसुते ॥ १ ॥
 भृत्वरधर्षिणि दृष्टाधर्षिणि दृष्टुध्वमर्षिणि हर्षरने
 त्रिभुवनधर्षिणि शंकरतंघ्रिणि कल्मषधर्षिणि घांघरने ।
 दनुर्गनिर्गर्षिणि दृष्टंशर्षिणि दृष्टुनिर्गर्षिणि मिश्रमने
 जय जय हे मन्त्रिषामुग्मर्दिनि ग्यकपर्दिनि शंलसुते ॥ २ ॥
 अथ जगदम्भ कटाक्षवर्षाप्रवर्षाभिनि तार्षिणि हायरने
 शिखरिगिरीशर्षिणात्तुहिमालध्वनिनालध्वमध्वगने ।

प्रकृत स्वर्गनामा द्रष्टुं नमस्कृतं हननात्ता शगदत शतना धीयार्के
 मय्यां प्रतिपद्यते तद्व्याप्तं कल्पवृक्षां अथ एतन्न पदानं कल्पवृक्षां
 हे क्षात्रान् विद्युत्तौ प्रियं पत्न्यं गात्राणामुद्घातौ शर्वज्ञौ । सापत्नौ जय
 तौ, जय तौ ॥ ३ ॥

दमयन्ति इन्द्रका मनुजैश्च न वननिर्वातो दृष्टुं तथ दृष्टुध्व गम्यक
 धर्षिणां प्रियं कल्पवृक्षां मन्त्रिणां दृष्टुं तथ दृष्टुध्व गम्यक
 धर्षिणां प्रियं कल्पवृक्षां मन्त्रिणां दृष्टुं तथ दृष्टुध्व गम्यक
 धर्षिणां प्रियं कल्पवृक्षां मन्त्रिणां दृष्टुं तथ दृष्टुध्व गम्यक
 धर्षिणां प्रियं कल्पवृक्षां मन्त्रिणां दृष्टुं तथ दृष्टुध्व गम्यक
 धर्षिणां प्रियं कल्पवृक्षां मन्त्रिणां दृष्टुं तथ दृष्टुध्व गम्यक
 धर्षिणां प्रियं कल्पवृक्षां मन्त्रिणां दृष्टुं तथ दृष्टुध्व गम्यक
 धर्षिणां प्रियं कल्पवृक्षां मन्त्रिणां दृष्टुं तथ दृष्टुध्व गम्यक
 धर्षिणां प्रियं कल्पवृक्षां मन्त्रिणां दृष्टुं तथ दृष्टुध्व गम्यक

जगत्तुः शान्तिध्वनितम्भं कल्पवृक्षस्यै जगते शयिष्यते
 निधाय कल्पवृक्षां यत्र गच्छेत्तु शान्तिं तत्र शयिष्यते यत्र यत्र
 शयिष्यते तत्र शान्तिं तत्र शयिष्यते तत्र शयिष्यते तत्र शयिष्यते

धनान्मृदङ्गगणध्वजगण्डुपरिष्कारदङ्गनदत्तकटकं
 कनकविद्याङ्गपुष्पान्यनिष्कङ्गमददशङ्कहताधट्टक
 तमत्तनुदङ्गनलक्षितमङ्गघटन् बहुदङ्गदन् चट्टकं
 जय जय हे माहात्म्यास्यदिनि गच्छकपर्दिनि शान्तायने ॥ ६ ॥
 अथि गणदुष्टशत्रुवधादधुगुष्टंनिर्भृशक्तिधुने
 अन्तर्गवचाभूर्गणमहाशयदूनकनपमथाधिपते
 दुरितदुर्गीहदुग्माशयदुर्मौतदानवदूनदुर्गन्गते
 जय जय हे परिषाममर्दिनि गच्छकपर्दिनि शान्तायने ॥ ७ ॥
 अथि जाणागतवींश्रधुजनचोत्तराभयदाधिकरं
 त्रिभुवनममनकशालविगंधिशिनोधिक्रनामनशान्करं

गणध्वजगण्डुपरिष्कारदङ्गनदत्तकटकं
 कनकविद्याङ्गपुष्पान्यनिष्कङ्गमददशङ्कहताधट्टक
 तमत्तनुदङ्गनलक्षितमङ्गघटन् बहुदङ्गदन् चट्टकं
 जय जय हे माहात्म्यास्यदिनि गच्छकपर्दिनि शान्तायने ॥ ६ ॥
 अथि गणदुष्टशत्रुवधादधुगुष्टंनिर्भृशक्तिधुने
 अन्तर्गवचाभूर्गणमहाशयदूनकनपमथाधिपते
 दुरितदुर्गीहदुग्माशयदुर्मौतदानवदूनदुर्गन्गते
 जय जय हे परिषाममर्दिनि गच्छकपर्दिनि शान्तायने ॥ ७ ॥
 अथि जाणागतवींश्रधुजनचोत्तराभयदाधिकरं
 त्रिभुवनममनकशालविगंधिशिनोधिक्रनामनशान्करं

गणध्वजगण्डुपरिष्कारदङ्गनदत्तकटकं
 कनकविद्याङ्गपुष्पान्यनिष्कङ्गमददशङ्कहताधट्टक
 तमत्तनुदङ्गनलक्षितमङ्गघटन् बहुदङ्गदन् चट्टकं
 जय जय हे माहात्म्यास्यदिनि गच्छकपर्दिनि शान्तायने ॥ ६ ॥
 अथि गणदुष्टशत्रुवधादधुगुष्टंनिर्भृशक्तिधुने
 अन्तर्गवचाभूर्गणमहाशयदूनकनपमथाधिपते
 दुरितदुर्गीहदुग्माशयदुर्मौतदानवदूनदुर्गन्गते
 जय जय हे परिषाममर्दिनि गच्छकपर्दिनि शान्तायने ॥ ७ ॥
 अथि जाणागतवींश्रधुजनचोत्तराभयदाधिकरं
 त्रिभुवनममनकशालविगंधिशिनोधिक्रनामनशान्करं

गणध्वजगण्डुपरिष्कारदङ्गनदत्तकटकं
 कनकविद्याङ्गपुष्पान्यनिष्कङ्गमददशङ्कहताधट्टक
 तमत्तनुदङ्गनलक्षितमङ्गघटन् बहुदङ्गदन् चट्टकं
 जय जय हे माहात्म्यास्यदिनि गच्छकपर्दिनि शान्तायने ॥ ६ ॥
 अथि गणदुष्टशत्रुवधादधुगुष्टंनिर्भृशक्तिधुने
 अन्तर्गवचाभूर्गणमहाशयदूनकनपमथाधिपते
 दुरितदुर्गीहदुग्माशयदुर्मौतदानवदूनदुर्गन्गते
 जय जय हे परिषाममर्दिनि गच्छकपर्दिनि शान्तायने ॥ ७ ॥
 अथि जाणागतवींश्रधुजनचोत्तराभयदाधिकरं
 त्रिभुवनममनकशालविगंधिशिनोधिक्रनामनशान्करं

दुर्मिदुमितामन्दुर्भावात्पुद्गलकृतद्विजुनिकर
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकर्षर्दिनि शंलसूते ॥ ८ ॥
 मृगनालनागतश्रयितश्रयितशाधिनयोनरकृत्वरणे
 धृनककुथाकुकुथाटिडदाडिकतालकुनृदलमानरते ।
 धधकटधधर्षार्थिन्धिनध्वनिधोगमृदङ्गनिनादगो
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकर्षर्दिनि शंलसूते ॥ ९ ॥
 जय जय जाष्यजये जयजब्दपरस्तुतितनयगविष्वनुते
 अणअणार्णार्णिकृतनृपुरार्णार्णतभोहितभूनपते ।
 नाटितनटाधनर्दानटनाचकनाटदनाटितनाठ्यरते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकर्षर्दिनि शंलसूते ॥ १० ॥
 आयि सुमनःसुमनःसुमनःसुमनःसुमनोऽयकान्तिर्युते
 श्रितरजनीरजनीरजनीरजनीरजनीकरखक्त्रभूते ।

देवाओंको दुन्दुधमे दम दम' इम प्रकरकी स्वनिमे मममन दिशाएकीका
 कार-आर गुणाका जगरेगाणा हे भगवान श्रितका प्रिय पत्नी माटिषासुरमर्दिने
 पानेसी! आपकी जय हो, जय हो ॥ ८ ॥

देवांगनाओंके मन-शा-श्रयि शंसि आः शब्दोंमें युक्त भाष्यमथ सुदरने
 मान सदांजाया कुकुथा आदि विभिन्न प्रकार के मंत्राओंवाले मन्त्राओंमें यक्त
 अणचयधन गीनाका मन्त्रमं लोच रत्नेवगतो ओ मृशको सुपुष्ट अण
 आदि मन्त्रों के श्रयिकों सुननमें कथा जन्मवानों हे भगवान राजाओं पिता
 यना महिषासुरमर्दिने पानेवा! आपकी जय हो, जय हो ॥ ९ ॥

हे जयगा मन्त्रका श्रितान्तिर्युते श्रित-सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः
 वा वासुदेवदेव-संयुते करन्म नलाः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः
 शनिनाला शयन नयक ज्ञान ज्ञान शिष्यम शब्दोंमें मन्त्राः मन्त्राः
 मन्त्राः शिष्यम कर्म ज्ञान शयन नयक शयन शयन शयन शयन शयन
 शयन शयन शयन शयन शयन शयन शयन शयन शयन शयन शयन
 शयन शयन शयन शयन शयन शयन शयन शयन शयन शयन शयन ॥ १० ॥

देवनांके मन सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः

कामनदनामलकंमिनकातिकलाकारनामलभावातल
 मकनविलासकलनिलयक्रमकलिचलकलदसकुले ।
 अलिकुलसङ्कुलकुनलमण्डलमोर्लामिलदयकुर्यानिकुले
 जय जय हे महिषामृमदिनि गयकपदिनि शैलसुने ॥ १४ ॥
 करभ्रलोचवर्जितकूजितस्वजितकांकिलमञ्जुमते
 मितितमिलिन्दमनाहरगृजितरञ्जितशैलनिकुञ्जगतं ।
 विजगणभूमयहशचरीगणारङ्गसम्भृतकेलिरते
 जय जय हे महिषामृमदिनि गयकपदिनि शैलसुने ॥ १५ ॥
 कतिनटपीतदुकुलविचित्रमयुखनिरम्कृतचण्डुरुचे
 जितकनकाचदमोर्लामिताजितकञ्जाम्कम्भकृचे ।

क मलाटलके मनुष्ये जय जय जय हे महिषामृमदिनि गयकपदिनि शैलसुने ॥ १४ ॥
 क मलाटलके मनुष्ये जय जय जय हे महिषामृमदिनि गयकपदिनि शैलसुने ॥ १५ ॥
 क मलाटलके मनुष्ये जय जय जय हे महिषामृमदिनि गयकपदिनि शैलसुने ॥ १६ ॥

आपके तथमे मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु
 आपके तथमे मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु
 आपके तथमे मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु
 आपके तथमे मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु

आपके तथमे मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु
 आपके तथमे मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु
 आपके तथमे मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु मूर्तिभित्तु

प्रणतगुणान्मूर्त्तिसिद्धिस्तुतदशुनमनस्रचन्द्रनचं
 जय जय हे महिष्मसुमर्दिनि मध्यकपर्दिनि शैलमुने ॥ १८ ॥
 विजितमहस्रकं करारुत्तकरकमहस्रकरेकनुने
 कृतगुणारकमङ्गुतारकमङ्गुतारकसुनुने ।
 मृगशममाधिसमानममाश्रितपानममाधिसृजाचरने
 जय जय हे महिष्मसुमर्दिनि मध्यकपर्दिनि शैलमुने ॥ १९ ॥
 पद्मकमलं करुणानिलयं वरिवस्यति याऽनुद्भिनं सुशिवे
 आयि कपलं कमलानिलयं कमलानिलयः स कथं न भवेत् ।

सक्ष्मप्रकाशलो ओम् शिवो एषाम् कर्मणाम् देवताः सत्यं
 इत्येव ब्रह्मकारुण्यं । तत्रैवः निजम् ६३ किमर्थं चरन्ति
 तस्मान्मनुं नन्दमारुहं कालः शरणं कर्तव्यम् । भगवति
 शिरसां तस्य पत्नी महिष्मसुमर्दिनी पत्नी । भगवति जय हे
 वय हो ॥ १८ ॥

तस्मान्मनुं नन्दमारुहं कालः शरणं कर्तव्यम् । भगवति
 शिरसां तस्य पत्नी महिष्मसुमर्दिनी पत्नी । भगवति जय हे
 वय हो ॥ १८ ॥

हे देवान्धे । तस्मान्मनुं नन्दमारुहं कालः शरणं कर्तव्यम् । भगवति
 शिरसां तस्य पत्नी महिष्मसुमर्दिनी पत्नी । भगवति जय हे वय
 हो ॥ १८ ॥

नव चन्द्रमिव एव श्रद्धास्मिन्वति शीलयतां यम किं न शिवं
उय जय हे महिषामुरमर्दिनि गण्यकपर्दिनि शैलमृतं ॥ १८ ॥

कनकलम्बल्लभशोकजलोग्निधुञ्जनि नेऽङ्गणरङ्गधुवं
भजति स किं न शचीकुचकुम्भमटोपनिभन्नुत्रानुभवम् ।

नव चरणं शरणं करवाणि मुवाणि तथं यम देहि शिवं
उय जय हे महिषामुरमर्दिनि गण्यकपर्दिनि शैलमृतं ॥ १९ ॥

नव विमलन्दकला वदनेन्दुमलं कलवन्ननुकलयते
किम् एरुहृन्पर्गिन्नुपुख्रीमपुख्रीभिरसौ विमृख्रीक्रियते ।

श्या नही राज हाता । हे शिव । आपका चरण ही यम है । गीधी
हे चरण भविना रहनेवाले नृश भक्तों का का सुख ही नहीं ही जानना
अक्षय भव कुरु प्राप्त हो जानना । हे भगवान् शिवजी शिव कर्त्तव्य
महिषामरुदों को तारो आपकी उय ही उय हो ॥ १८ ॥

स्वर्ग के गायन समकाले महोक्त काली वा अतः प्राप्तिका
गोभयिका पराजितन का नमो स्वच्छ वचन है नही इन्द्रायोधि
समान विद्याया तस्य भवतीत्यात्मा सुन्दरीत्यात्मा गान्धर्व्य युक्त जगत्पुत्र
ही प्राप्त करण है हे गरुडोंवा । ये आदि सगर्भेस ही अतः ॥
गण्यकपर्दिनि वचन है मृत कः शरणार्थक मया प्रदान कृत हे अक्षय
जायते शिव मया शरणार्थकान् प्रदाने । आपकी उय ही उय
ही ॥ १९ ॥

गान्धर्व्य गन्धर्व्य सुन्दरी सुन्दरीत्यात्मा गान्धर्व्य गान्धर्व्य
विद्याया तस्य भवतीत्यात्मा सुन्दरीत्यात्मा गान्धर्व्य युक्त जगत्पुत्र
गण्यकपर्दिनि वचन है मृत कः शरणार्थक मया प्रदान कृत हे अक्षय

माय न मर्त जिद्यमानधनं भवती कृपया क्रिमु न क्रियते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि गय्यकपर्दिनि शैलमुने ॥ २० ॥
 अथि मयि दीनदवास्तसा कृपयैव त्वया भद्रित्यममै
 क्षीय ज्ञानो जननीति यथा ज्ञेय प्रयाजिते तथा जन्मनामि गमे ।
 अर्धान्तमत्र भवत्पुरम कुरु शास्त्रवि द्वेवि हयां कुरु मे
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि गय्यकपर्दिनि शैलमुने ॥ २१ ॥
 मूर्तिपिपां प्रिमित, सुगमाधिना नियमनो यमतोऽनुदिन प्रठेत् ।
 चाम्प्या गम्या स निधेयते यमिजनां जमिजनां जमि च न भजेत् ॥ २२ ॥

॥ इति श्रीमज्जान्नाति. समुत्था ॥

अथैवमिच्छते सम्भनन अन्ना नदम भवन्तीनालो । हे भवन्ती ।
 मेता ना यः विद्याय हं हि अन्ना कृपयो ज्ञेय ज्ञी लिदु भवन्तीनालो ॥
 हे भवन्ती शिव ही दिव्य एते महिषासुरमर्दिना यमनो । आपदा भवन्ती
 जय जय ॥ २३ ॥

इ एव । अथैवमिच्छते । हे भवन्ती । अथैवमिच्छते । हे भवन्ती ।
 मन्त्राय कृपया नयो रते हे भवन्ती । अथैवमिच्छते । हे भवन्ती ।
 अथैवमिच्छते । हे भवन्ती । अथैवमिच्छते । हे भवन्ती ।
 अथैवमिच्छते । हे भवन्ती । अथैवमिच्छते । हे भवन्ती ।
 अथैवमिच्छते । हे भवन्ती । अथैवमिच्छते । हे भवन्ती ।
 अथैवमिच्छते । हे भवन्ती । अथैवमिच्छते । हे भवन्ती ।

हे भवन्ती । अथैवमिच्छते । हे भवन्ती । अथैवमिच्छते । हे भवन्ती ।
 अथैवमिच्छते । हे भवन्ती । अथैवमिच्छते । हे भवन्ती ।
 अथैवमिच्छते । हे भवन्ती । अथैवमिच्छते । हे भवन्ती ।
 अथैवमिच्छते । हे भवन्ती । अथैवमिच्छते । हे भवन्ती ।

॥ इति श्रीमज्जान्नाति. समुत्था ॥

६१ — संकष्टनामाष्टकम्

नाद इव

जैगीषव्य मनिश्रेष्ठ सर्वज्ञ मुखद्रायक ।
 आश्रयातानि सुपुण्ड्रानि श्रुणानि त्वत्प्रसादतः ॥ १ ॥
 न नृत्तिमधिगच्छामि तव वागमृतेन च ।
 चटर्ष्यकं महाभाग मकटाख्यानमुनयम् ॥ २ ॥
 इति तस्य तत्रः श्रुत्वा जैगीषव्योऽद्वर्त्तनतः ।
 संकष्टनाशनं स्तोत्रं शृणु देवर्षिमत्तम ॥ ३ ॥
 द्वापरे तु पुग वृते भ्रष्टराज्यो बुधिष्टिः ।
 भ्रातृभिः सहितो राज्यनिर्वैदं परमं गतः ॥ ४ ॥
 तदानीं तु ततः काशीं पूर्णं यातां पद्माम्बुनिः ।
 मार्कण्डेय इति ख्यानः मह शिष्यैर्महावशाः ॥ ५ ॥

नारदजी शंले — इ पुण्ड्रानि सुपुण्ड्रानि । इ श्रुणानि । इ मुखद्रायक ।
 आश्रयातानि कुतानि येन तत्र अश्रयातानि अनेक अश्रयानि यानि । किं
 अश्रयानि अश्रयानि अश्रयानि अत्र नृत्तिमधि गच्छामि तदा ही मता ही अत त
 मन्त्रानि । अत संकष्टनाशनं इति इति शिष्यैर्महावशाः ॥ ३ ॥

इति नारदजी शंले — इ जैगीषव्योऽद्वर्त्तनतः ।
 इति इति मुखद्रायक नृत्तिमधि गच्छामि तदा ही मता ही अत त
 मन्त्रानि ॥ ३ ॥

इति नारदजी शंले — इ जैगीषव्योऽद्वर्त्तनतः ।
 इति इति मुखद्रायक नृत्तिमधि गच्छामि तदा ही मता ही अत त
 मन्त्रानि ॥ ३ ॥

इति नारदजी शंले — इ जैगीषव्योऽद्वर्त्तनतः ।
 इति इति मुखद्रायक नृत्तिमधि गच्छामि तदा ही मता ही अत त
 मन्त्रानि ॥ ३ ॥

तं दृष्ट्वा स ममृत्याय प्रणिपत्य मुपूजितः ।
 किमर्थं म्लानवदन एतन्न्रं मां निवन्दय ॥ ६ ॥

संकटां मे महन्प्राजयेतादृश्वदनं ततः ।
 एतन्निवारणोपायं किञ्चिद् ब्रूहि मूने मम ॥ ७ ॥

आनन्दकानने देवी संकटा नाम विश्रुता ।
 वीणेश्वरोत्तमं भागे पूर्वं चन्द्रेश्वरस्य च ॥ ८ ॥
 शृणु नामाष्टकं तम्याः सर्वसिद्धिकरं नृणाम् ।
 संकटा प्रथमं नाम द्वितीयं विजया तथा ॥ ९ ॥
 तृतीयं कामदा प्रोक्तं चतुर्थं दुःखहार्गिणी ।
 शर्वाणी यञ्चमं नाम षष्ठं कात्यायनी तथा ॥ १० ॥

इत मृगिको देवदेव नृशोभने ३ इत प्रणामं कृत्वा तमेश्वरा
 एतं नाम भक्तोभक्ति मुनिन माङ्गल्यकानने नाम वद-—आनन्द
 मृत्याय उवाच कथा इ आनन्द मुने प्रह चकरोत् ॥ १० ॥

वृधिक्षिप्र धान्तं—मुने महान् उवाच शिवा ॥ इतो उवाचानं मां
 भुवने तस्यो उवाचो हे । इ इतो आनन्द मुने इत उवाच कथायुक्ता
 शर्वा उवाच उवाच ॥ १० ॥

माङ्गल्यकानने लोच—माङ्गल्यकानने । कथायुक्ता । न 'लक्ष्म्य' नामकं
 कथायुक्ता कथायुक्ता है, श्री व्याख्यातक एतन्निवारणं तथा उवाच उवाच
 एतन्निवारणं कथायुक्ता ॥ १० ॥

अनुष्ठीयते तथा निर्वृत्तं ज्ञानं कर्मव्यापि तुल्यं क्षमाद्वैतस्योपदेश
 मान्यं । एतन्निवारणं कथायुक्ता कथायुक्ता कथायुक्ता कथायुक्ता
 कथायुक्ता कथायुक्ता कथायुक्ता कथायुक्ता कथायुक्ता कथायुक्ता

सप्तमं धामनयना सर्वगंगहगऽष्टमम् ।
 नामाष्टकमितं पुण्यं त्रिसंध्यं श्रद्धयाऽन्वितः ॥ ११ ॥
 वः पठत्याटवद्वारिषि नगं मुच्येत संकटान् ।
 इत्युक्त्वा तु द्विजश्रंष्टमपिवांगणनीं ययौ ॥ १२ ॥
 इति नम्य वचः श्रुत्वा नागदो हर्षनिर्भरः ।
 ततः सम्पूजितां देवीं वीरश्रवणमन्विताम् ॥ १३ ॥
 भृजैस्तु दशाभिर्युक्तां लोचनत्रयभूषिताम् ।
 मालाकमण्डलुयुतां पद्मशङ्खगदायुताम् ॥ १४ ॥
 त्रिशूलडमरुधरां खड्गचर्मविभूषिताम् ।
 वन्द्यभयहस्तां तां प्रणम्य विधिनन्दनः ॥ १५ ॥
 वाग्रयं गृहीत्वा तु ततो विष्णुपुरं ययौ ।
 एतत्पुत्रस्य पठनं पुत्रपौत्रविवर्धनम् ॥ १६ ॥

सप्तमं धामनयना नाम धामनीं नाम सप्तगङ्गा कला मता है । जो
 मनुष्य श्रद्धासे युक्त होकर देवी सरस्वती की कल्याणकारी नामानुष्ठान
 स्तोत्रका शोक सन्त्याज्यकरके वाच करता या करता है, वह संकटम
 नाग हो जाता है । द्विजश्रंष्टमपिवांगणनीं नाम त्रिगणेश
 वागणयो नक्षत्र गये ॥ १-१२ ॥

ततः सप्तमं धामनयनां नाम सप्तगङ्गा कला मता है । जो
 मनुष्य श्रद्धासे युक्त होकर देवी सरस्वती की कल्याणकारी नामानुष्ठान
 स्तोत्रका शोक सन्त्याज्यकरके वाच करता या करता है, वह संकटम
 नाग हो जाता है । द्विजश्रंष्टमपिवांगणनीं नाम त्रिगणेश
 वागणयो नक्षत्र गये ॥ १-१२ ॥

अकण्ठनाशनं चैव त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ।
गोपनीयं प्रयत्नेन महावन्द्याप्रसूतिकृत् ॥ १७ ॥

। इति श्रीमत्सहायस्योपनिषत्सु अकण्ठनाशक मन्त्राणाम् ॥

६२ — तुलसीस्तुतिः

श्रीभक्तानुकम्प

वृन्दारूपाश्च वृक्षाश्च यदेकत्र भवन्ति च ।
विदुर्दुर्धाम्नेन वृन्दां पत्त्रियां तां भजाप्यहम् ॥ १ ॥
पुग बभूव वा देवी त्वादीं वृन्दावने वने ।
तेन वृन्दावती ख्याता सौभाग्यां तां भजाम्यहम् ॥ २ ॥
अमंश्र्याप् च विश्वेषु पूजिता या निम्नरम् ।
तेन विश्वपूजितायां जगत्पृथ्वां भजाम्यहम् ॥ ३ ॥

वृन्दारूपाश्च वृक्षाश्च यदेकत्र भवन्ति तां वृन्दावती
पत्त्रियां तां भजाप्यहम् ॥ १ ॥ वृन्दावती वृन्दावती
वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती
वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती ॥ १२—१३ ॥

यस्य वृन्दारूपाश्च वृक्षाश्च यदेकत्र भवन्ति तां वृन्दावती ॥ १२ ॥

श्रीभक्तानु कम्पे — तत्र वृन्दा । वृन्दावती । एता वृन्दा वृन्दा
वृन्दा वृन्दा वृन्दा वृन्दा वृन्दा वृन्दा वृन्दा वृन्दा वृन्दा
वृन्दा वृन्दा वृन्दा वृन्दा वृन्दा वृन्दा वृन्दा वृन्दा वृन्दा
वृन्दा वृन्दा वृन्दा वृन्दा वृन्दा वृन्दा वृन्दा वृन्दा वृन्दा
वृन्दा वृन्दा वृन्दा वृन्दा वृन्दा वृन्दा वृन्दा वृन्दा वृन्दा ॥ १२ ॥

वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती
वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती
वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती
वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती ॥ २ ॥

वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती
वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती
वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती
वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती वृन्दावती ॥ ३ ॥

असंख्यानि च विश्वानि पवित्राणि यथा मदा ।
 तां विश्वपावनीं देवीं विरहेण मगज्यहम् ॥ ४ ॥
 देवा न नृष्टाः पुण्याणां समूहेन यथा विना ।
 तां पुष्पमारा शुद्धां च द्रष्टुमिच्छामि शोकितः ॥ ५ ॥
 विश्वं यत्प्राप्तिमात्रेण थक्कानन्दां भवेद् ध्रुवम् ।
 नन्दिनी तेन विख्याता सा प्रीता भवनाद्धि पं ॥ ६ ॥
 यस्या देव्यास्तुला नाम्नि विश्वेषु निखिलेषु च ।
 तुलसी तेन विख्याता तां यामि शरणं प्रियाम् ॥ ७ ॥
 कृष्णजीवनरूपा या शश्वत्प्रियतमा मती ।
 तेन कृष्णजीवनीति मम रक्षन्तु जीवनम् ॥ ८ ॥

॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्तसहास्रनामं एकविंशोऽध्यायः श्रीगणेशाय नमः ॥

जिह्वान लला अनल विश्वाको जीव विद्या = इन विश्वपावनी
 देविका में त्रिहृदयं अतुर तत्र मरण जाता है ॥ ४ ॥

तत्र विना अत्र पुष्पमृतां शरीर करण भा देवता नमन
 की इति गेदा मगज्यहम् — पुष्पां मगज्यहम्, गुरुज्यहम्, तनसंज्ञाका
 में शोकित व्याकुल होकर दर्शन करना चाहता है ॥ ५ ॥

संसार में त्रिहृदयं शक्तिमान् भक्त मम अतन्दिनी ही जाना है
 इमं विना नमिनां नाम विना शक्ति है व भक्तों पुनः भक्त
 मृदुल ममन ही कार्य ॥ ६ ॥

जिन देवता शक्ति विद्यामें कृतं नमन नाम है अतएव जो
 'तुलसी' कहना ही नव रूपों मगज्यहम् में शरण मरण करण है ॥ ७ ॥

वे नामों तुलसी नन्दनमने भा तन पात्रपाका जगन्मन्त्राय
 व अत्र जगती मग विश्वमा इति 'कृष्णजीवनी' मने विख्याता
 है । न नृणां पुण्या मम जीवनमा रक्षन्ति ॥ ८ ॥

॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्तसहास्रनामं एकविंशोऽध्यायः श्रीगणेशाय नमः ॥

तां देवीं कृष्णजीवनीं नमः ॥ ८ ॥

६३ — तुलसीस्तोत्रम्

जगद्धात्रि नमस्तुभ्यं विष्णोश्च प्रियवत्सभे ।
 यतो ब्रह्माडयो देवाः सृष्टिस्थित्यन्तकारिणः ॥ १ ॥
 नमस्तुभ्यं कल्याणि नमो विष्णुप्रियं शुभे ।
 नमो मांशुप्रदे देवि नमः सम्यत्प्रदाधिके ॥ २ ॥
 तुलसी घान् मां नित्यं सर्वापद्भ्योऽपि सर्वदा ।
 कीर्तितार्पि स्मृता वापि प्रविप्रयति मानवम् ॥ ३ ॥
 नमामि शिग्मा देवीं तुलसीं विलम्बननुम् ।
 यां दृष्ट्वा पापिनो मर्त्या मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषात् ॥ ४ ॥
 तुलस्या रक्षितं सर्वं जगदेतच्चराचरम् ।
 या विनिहन्ति पापानि दृष्ट्वा वा पापिभिर्नरैः ॥ ५ ॥

३ जगद्धात्रि । ३ विष्णुश्च प्रियवत्सभे । आत्मको नमस्कार है
 आपस में शक्ति प्राप्तकर ब्रह्मा आदि देवता देवत्वका मुक्ति पालन
 तथा संसार उन्मूलन समर्थ होते हैं ॥ १ ॥

४ कल्याणमया भुक्तिम् । आत्मको नमस्कार है । हे श्रीभाग्यशालिनी
 विष्णुप्रिय ! आत्मको नमस्कार है । हे मांशुप्रियतां देवि । आपका
 नमस्कार है । हे मांशुप्रिय देवताता देवि ! आपका नमस्कार है ॥ २ ॥

५ तुलसी तुलसीं स्मृता आदिदेवतां नित्यं जगत् रक्षा करें । इनका संस्कार
 को या स्मरण करने पर देवी तुलसी नृत्यरसो नृत्यरसो जगत् रक्षा करेगी है ॥ ३ ॥
 ६ तुलसीमांशुप्रिय विष्णुप्रिय नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं मे प्रियकर शुभकर
 मानव जगत् । नित्यं देशर करके कलकौ मरुत जगत् रक्षण
 मुक्त ही जावे है ॥ ४ ॥

७ तुलसी तुलसीं स्मृता आदिदेवतां नित्यं जगत् रक्षा करें । आपसे
 नमस्कार करने से देवी तुलसी नृत्यरसो नृत्यरसो जगत् रक्षा करेगी है ॥ ५ ॥

नमस्तुलस्यतितरां यस्य बद्ध्वाञ्जलि कलौ ।
 कलायन्ति मुखं सर्वं म्रियं वैश्यास्तथाऽपरि ॥ ६ ॥
 तुलस्या नापां किञ्चिद् देवनं जगतीतले ।
 यथा पवित्रितां लोको विष्णुमङ्गलं वैष्णवः ॥ ७ ॥
 तुलस्याः पल्लव्यं विष्णोः शिरस्यांगपितं कलौ ।
 आरोंपयति सर्वाणि श्रेयांसि वाममूले ॥ ८ ॥
 तुलस्यां मकला देवा वसन्ति सततं यतः ।
 अतस्तामर्चयेत्लोकं सर्वान् देवान् सपर्वचम् ॥ ९ ॥
 नमस्तुलसि सर्वज्ञे पुरुषानमवत्तभे ।
 याहि मां सर्वपापेभ्यः सर्वसम्पत्प्रदायिके ॥ १० ॥

६ । तुलसी । आरोंपि । अमूल्य । ७ । किञ्चिद् । अल्प । अङ्गुली । तथा । जगती । जगत् ।
 नमस्तुलसि । नमस्तुलसी । अमूल्य । ८ । आरोंपि । अङ्गुली । अमूल्य । ९ । अतस्तामर्चयेत् ।
 अतस्तामर्चयेत् । लोको । विष्णुमङ्गलं । वैष्णवः । १० । याहि । आरोंपि । अमूल्य ।

११ । तुलसी । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य ।

१२ । तुलसी । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य ।

१३ । तुलसी । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य ।

१४ । तुलसी । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य । अमूल्य ।

इति स्तोत्रं पुग गीतं पुण्डरीकेण धीयता ।
 विष्णुमर्चयता नित्यं शोभनेऽनुलसीदलः ॥ ११ ॥
 तुलसी श्रीमहालक्ष्मीविद्याविद्या यथास्विनी ।
 धर्षा धर्मानना टंती देवीदेवमनःप्रिया ॥ १२ ॥
 लक्ष्मीप्रियसखी देवी ह्यर्भूमिग्वला चला ।
 षोडशैतानि नामानि तुलस्याः कीर्तयन्नरः ॥ १३ ॥
 लभते मुक्तां धनिकमने विष्णुपदं लभेत् ।
 तुलसी भूमहालक्ष्मीः पद्मिनी श्रीहृदिप्रिया ॥ १४ ॥
 तुलसी श्रीमखि शुभे पापहर्गिण पुण्यदं ।
 नमस्ते नारदनृते नारायणमनःप्रिये ॥ १५ ॥

॥ इति श्रीपुण्डरीककृतं तुलसीनां च मन्त्रांश्च ॥

पुण्डरीककृतं श्रीपुण्डरीककृतं तुलसीनां च मन्त्रांश्च इति स्तोत्रं पुग गीतं पुण्डरीकेण धीयता ।
 विष्णुमर्चयता नित्यं शोभनेऽनुलसीदलः ॥ ११ ॥
 तुलसी श्रीमहालक्ष्मीविद्याविद्या यथास्विनी ।
 धर्षा धर्मानना टंती देवीदेवमनःप्रिया ॥ १२ ॥
 लक्ष्मीप्रियसखी देवी ह्यर्भूमिग्वला चला ।
 षोडशैतानि नामानि तुलस्याः कीर्तयन्नरः ॥ १३ ॥
 लभते मुक्तां धनिकमने विष्णुपदं लभेत् ।
 तुलसी भूमहालक्ष्मीः पद्मिनी श्रीहृदिप्रिया ॥ १४ ॥
 तुलसी श्रीमखि शुभे पापहर्गिण पुण्यदं ।
 नमस्ते नारदनृते नारायणमनःप्रिये ॥ १५ ॥

॥ इति श्रीपुण्डरीककृतं तुलसीनां च मन्त्रांश्च ॥

६४—षष्ठीस्तोत्रम्

सप्तमः सर्गः

नमो देव्यै महादेव्यै सिद्ध्यै शान्त्यै नमो नमः ।
 शुभायै देवमनायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः ॥ १ ॥
 वरदायै पुत्रदायै धनदायै नमो नमः ।
 सुखदायै मोक्षदायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः ॥ २ ॥
 शक्तिः षष्ठांशरूपायै सिद्धायै च नमो नमः ।
 मायायै सिद्ध्यांगिन्यै षष्ठीदेव्यै नमो नमः ॥ ३ ॥
 पारायै पारदायै च षष्ठीदेव्यै नमो नमः ।
 सागवै शारदायै च पारायै सर्वकर्मणाम् ॥ ४ ॥
 बालाधिष्ठातृदेव्यै च षष्ठीदेव्यै नमो नमः ।
 कल्याणदायै कल्याण्यै फलदायै च कर्मणाम् ॥ ५ ॥

राज्ञा प्रियव्रत बोलें — देव्याको नमस्कृत्य तां गणदायैकै नमस्कृत्य
 त । नमो देव्यै सिद्ध्यै च शान्त्यैकै नमस्कृत्य है । शुभा देवमना तां
 नमो देव्यै वरदायै पुत्रदायै धनदायै नमस्कृत्य है । वरदा पुत्रदा धनदा, सुखदा
 मोक्षदा पारायै पारदायै च षष्ठीको तां च नमस्कृत्य है ॥ १ ॥

२. देव्याको नमस्कृत्य देव्याको नमस्कृत्य शान्त्यै शान्त्यै सिद्ध्यैकै नमस्कृत्य
 है । नमो देव्यै सिद्ध्यांगिन्यै षष्ठीदेव्यै नमो नमः ॥ ३ ॥
 च नमो देव्यै पारायै पारदायै च षष्ठीको तां च नमस्कृत्य है ॥ ४ ॥

कल्याणदायै कल्याण्यै फलदायै च कर्मणाम् ॥ ५ ॥
 बालाधिष्ठातृदेव्यै च षष्ठीको तां च नमस्कृत्य है ॥ ५ ॥

प्रत्यक्षायै च धन्वनां पृष्ठादेव्यै नमो नमः ।
 पूज्यायै स्कन्दकान्तार्यै सर्वेषां सर्वकर्मभु ॥ ६ ॥
 देवरक्षणकारिण्यै पृष्ठादेव्यै नमो नमः ।
 शुद्धमन्त्रस्वरूपायै वन्दिनायै नृणां सदा ॥ ७ ॥
 हिंसाक्रोधवर्जितायै पृष्ठादेव्यै नमो नमः ।
 धनं देहि प्रियां देहि पुत्र देहि सुश्रवणि ॥ ८ ॥
 धर्मं देहि यशो देहि पृष्ठादेव्यै नमो नमः ।
 धूमिं देहि प्रजां देहि देहि विद्यां सृष्टिजे ॥ ९ ॥
 कल्याणं च जयं देहि पृष्ठादेव्यै नमो नमः ।
 इति देवीं च संस्तुय तेषु पृथं प्रियव्रत ।
 यशस्विनं च राजेन्द्रः पृष्ठादेवीप्रसादतः ॥ १० ॥

॥ १० ॥ अथ राजेन्द्रः पृष्ठादेवीप्रसादतः ॥ १० ॥
 अथ राजेन्द्रः पृष्ठादेवीप्रसादतः ॥ १० ॥

अथ राजेन्द्रः पृष्ठादेवीप्रसादतः ॥ १० ॥
 अथ राजेन्द्रः पृष्ठादेवीप्रसादतः ॥ १० ॥

अथ राजेन्द्रः पृष्ठादेवीप्रसादतः ॥ १० ॥
 अथ राजेन्द्रः पृष्ठादेवीप्रसादतः ॥ १० ॥

षष्ठीस्तांत्रमिदं ब्रह्मन् यः शृणोति च वत्सरम् ।
 अपुत्रो लभते पुत्रं वं मुचिरजीविनम् ॥ ११ ॥
 वर्षेकं च चा भक्त्या संवतं शृणोति च ।
 सर्वपापाद्धिनिर्मुक्ता महाबन्ध्या प्रसूयते ॥ १२ ॥
 वीरपुत्रं च गुणिनं विद्यावनं यशस्विनम् ।
 मुचिगायुष्मन्मेव षष्ठीमातृप्रसादतः ॥ १३ ॥
 काकबन्ध्या च वा नार्ग मृतापत्या च वा भवेत् ।
 वर्षं श्रुत्वा लभेत्पुत्रं षष्ठीदेवीप्रसादतः ॥ १४ ॥
 रोगयुक्तं च बालं च पिता माता शृणोति च ।
 मासं च युच्यते बालः षष्ठीदेवीप्रसादतः ॥ १५ ॥
 ॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्तमहापुराणे प्रकृतिखण्डे प्रियव्रतकृत षष्ठीस्तांत्र सम्पूर्णम् ॥

ब्रह्मन् । या पुत्र्य भान्ती शान्तिं इति स्तोत्रशास्त्रार्थान्तक कल्प कस्ता
 है, यह यदि पुरुहीन हो तो देवजीवा मुन्दर पुर प्राप्त कर लेता है ॥ ११ ॥

श्री गौरी माता वरदाकर्मणि पूर्वक यक्षोचन होकर देवीकी पूजा
 करने इनका यह शोच मनता है इसके सम्पूर्ण रत्न प्रदान हो जाते
 हैं महान् उरगा भी इसके सम्मुख समान प्रयत्न कराना गोचरता प्राप्त
 कर लेता है । यह माता ब्रह्मादेवी के मास गुणा विधान यशस्वी
 विद्यापुत्र एवं अत्र प्रकृतो जन्मी हाने है ॥ १२ ॥

कल्पान्तर्वा शेषक भूतजन्मा श्री गुरु वशिष्ठ जनाका अर्थे कल्पके
 अन्तर्वा भीमकी तदर्थे अजन्म पुरु प्रारंभ करती है तांत्रिक कल्पका
 मास ही वशिष्ठी उरगा माता विना महात्मन् इत्यन्तर्वा यथा जन्मी
 पुरुषोत्तमो ही कुतश्चैतन्मि तावदत्र यथा शान्तता तातां है ॥ १३ ॥

...

६५—सुरभिस्तोत्रम्

ॐ नमः ॐ नमः

नमो देव्यै महादेव्यै सृष्ट्यै च नमो नमः ।
 गवां वीजस्वरूपायै नमस्तं जगदखिले ॥ १ ॥
 नमो गधाप्रियार्थे च पद्मांशायै नमो नमः ।
 नमः कृष्णाप्रियार्थे च गवां मात्रे नमो नमः ॥ २ ॥
 कल्पवृक्षस्वरूपायै सर्वेषां सततं परम् ।
 श्रींदायै धनदायै च बुद्धिदायै नमो नमः ॥ ३ ॥
 शुभदायै प्रनन्दायै गोप्रदायै नमो नमः ।
 यशोदायै सौख्यदायै धर्मजायै नमो नमः ॥ ४ ॥
 ज्योत्स्नस्मरणमात्रेण तुष्टा हृष्टा जगत्प्रभूः ।
 आविर्बभूव नत्रैव ब्रह्मलोकं मनातनी ॥ ५ ॥

महेश्वर ब्राह्मे— देवी गवां महादेवी सृष्ट्यै च नमो नमः
 है । जगदखिले । नमो गवां वीजस्वरूपायै नमस्तं जगदखिले ॥ १ ॥
 नमो गधाप्रियार्थे च पद्मांशायै नमो नमः ।
 नमः कृष्णाप्रियार्थे च गवां मात्रे नमो नमः ॥ २ ॥
 कल्पवृक्षस्वरूपायै सर्वेषां सततं परम् ।
 श्रींदायै धनदायै च बुद्धिदायै नमो नमः ॥ ३ ॥
 शुभदायै प्रनन्दायै गोप्रदायै नमो नमः ।
 यशोदायै सौख्यदायै धर्मजायै नमो नमः ॥ ४ ॥
 ज्योत्स्नस्मरणमात्रेण तुष्टा हृष्टा जगत्प्रभूः ।
 आविर्बभूव नत्रैव ब्रह्मलोकं मनातनी ॥ ५ ॥

इति महेश्वर ब्राह्मे महादेव्यै सृष्ट्यै च नमो नमः
 श्रींदायै धनदायै च बुद्धिदायै नमो नमः ॥ ३ ॥
 शुभदायै प्रनन्दायै गोप्रदायै नमो नमः ।
 यशोदायै सौख्यदायै धर्मजायै नमो नमः ॥ ४ ॥
 ज्योत्स्नस्मरणमात्रेण तुष्टा हृष्टा जगत्प्रभूः ।
 आविर्बभूव नत्रैव ब्रह्मलोकं मनातनी ॥ ५ ॥

इति महेश्वर ब्राह्मे महादेव्यै सृष्ट्यै च नमो नमः
 श्रींदायै धनदायै च बुद्धिदायै नमो नमः ॥ ३ ॥
 शुभदायै प्रनन्दायै गोप्रदायै नमो नमः ।
 यशोदायै सौख्यदायै धर्मजायै नमो नमः ॥ ४ ॥
 ज्योत्स्नस्मरणमात्रेण तुष्टा हृष्टा जगत्प्रभूः ।
 आविर्बभूव नत्रैव ब्रह्मलोकं मनातनी ॥ ५ ॥

महेंद्राय धारं दत्त्वा धाराञ्छुत सर्वदुर्लभम् ।
 जगाम सा च सांतांके चतुर्दशदशो गृहम् ॥ ६ ॥
 बभूव विश्वं महता दूधपूर्णं च नागद ।
 दूधान्दुग्धं गगो चङ्गमनःप्रीतिः भृगम्य च ॥ ७ ॥
 इदं स्तोत्रं महापुण्यं भक्तिप्रकृतञ्च यः पठेत् ।
 स गोमान् धनवांश्चैव कीर्तितान् पुण्यवान् भवेत् ॥ ८ ॥
 मुग्धातः सर्वतीर्थेषु सर्वयज्ञेषु दीक्षितः ।
 इह लोके मुखं भुक्त्वा यत्काले कृष्णमन्दिरम् ॥ ९ ॥
 सुचिरं निवसेत्तत्र कुरुते कृष्णसंवनम् ।
 न पुनर्भवन्तं तस्य ब्रह्मपुत्र भवे भवेत् ॥ १० ॥

॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्तपुराणे प्रकृतखण्डे महेंद्रकृत सर्गधर्मज्ञान अध्यायः ॥



इति श्रीब्रह्मवैवर्तपुराणे प्रकृतखण्डे महेंद्रकृत सर्गधर्मज्ञान अध्यायः ॥ १० ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्तपुराणे प्रकृतखण्डे महेंद्रकृत सर्गधर्मज्ञान अध्यायः ॥ १० ॥

॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्तपुराणे प्रकृतखण्डे महेंद्रकृत सर्गधर्मज्ञान अध्यायः ॥ १० ॥

॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्तपुराणे प्रकृतखण्डे महेंद्रकृत सर्गधर्मज्ञान अध्यायः ॥ १० ॥

॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्तपुराणे प्रकृतखण्डे महेंद्रकृत सर्गधर्मज्ञान अध्यायः ॥ १० ॥

सर्वधर्मज्ञानेन सर्वधर्मैः ॥



६६ — पृथ्वीस्तोत्रम्

ॐ

यजमृक्षजाया त्वं जयं देहि जयावहं ।
 जयेऽजये जयाधारे जयशीले जयप्रदे ॥ १ ॥
 सर्वाधारं सर्वर्षाजं सर्वशक्तिसमान्विते ।
 सर्वकामप्रदं देवि सर्वेषु देहि मे भवे ॥ २ ॥
 सर्वशम्यालये सर्वशम्यादये सर्वशस्यदे ।
 सर्वशस्यहरं काले सर्वशस्यात्मिके भवे ॥ ३ ॥
 मङ्गले मङ्गलाधारं मङ्गल्ये मङ्गलाप्रदे ।
 मङ्गलार्थे मङ्गलेशे मङ्गलं देहि मे भवे ॥ ४ ॥

भगवान् विष्णुं ह्यने— विष्णुको नाम कर्मवृत्तानि प्रसूयं
 मृतं विजयं ह्ये। एते शम्याया जयावहका वती च। जये। मृक्षानी
 र्षाणी समुद्राव नदी इती ये। यम विष्णुस्य मृक्षाय विष्णुस्य मृक्षाय
 विष्णुस्य मृक्षाय ॥ १ ॥

देवि मृक्षी सर्वकामे आशुभं च। सर्वशक्तिसमान्विते त्वय
 काले शक्तिसमान्विते त्वय सर्वशक्तिसमान्विते देवि ।
 मृक्षे इति सर्वकामे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे ॥ २ ॥

मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे
 मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे
 मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे
 मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे

मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे
 मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे
 मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे मृक्षे

भूमिं भूमिपसवस्रं भूमिपानपरावणे ।
 भूमिप्राहङ्गाग्रूपं भूमिं देहि च भूमिदे ॥ ५ ॥
 इत्तं स्तोत्रं महापुण्यं तां सम्पृण्य च यः पठेत् ।
 कोटिकोटि जन्मजन्म म भवेद् भूमिपेश्वरः ॥ ६ ॥
 भूमिदानकृतं पुण्यं लभते पठनाजनः ।
 भूमिदानहगत्यापान्मुच्यते नात्र संशयः ॥ ७ ॥
 भूमौ वीर्यन्यागपापाद् भूर्मा दीपादिस्थापनात् ।
 पापेन मुच्यते प्राज्ञः स्तोत्रस्य पाठनान्मुने ।
 अश्वमेधशतं पुण्यं लभते नात्र संशयः ॥ ८ ॥

॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्तमहापुराणे प्रकृतिखण्डे त्रिणाकृतं पृथ्वीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥



भूमि । एतन् भूमिपसवस्रं भूमिपानपरावणे इति त्रिंशत्
 भूमिप्राहङ्गाग्रूपं भूमिं देहि च भूमिदे ॥ ५ ॥
 [भा. ५] यह स्तोत्र पठने पापों में से। श्री पण्डित पृथ्वीराज गुप्त
 कहते हैं कि यह स्तोत्र पठने से भूमिपानपरावणे भूमिपानपरावणे—सम्पूर्ण
 भूमिपानपरावणे पापों में से ॥ ५ ॥

इत्तं स्तोत्रं महापुण्यं तां सम्पृण्य च यः पठेत् ।
 कोटिकोटि जन्मजन्म म भवेद् भूमिपेश्वरः ॥ ६ ॥
 [भा. ६] यह स्तोत्र पठने से भूमिपानपरावणे भूमिपानपरावणे—सम्पूर्ण
 भूमिपानपरावणे पापों में से ॥ ६ ॥

भूमि ! पृथ्वीया नीच व्यापने अथ वायु संवृत्या वा ताप ताप ।
 मां वृद्धिमतं पुनः तस्य स्तोत्रका पाठ करवाने मुझे ही जन्म दे । श्री श्री
 [भा. ७] यह स्तोत्र पठने से भूमिपानपरावणे भूमिपानपरावणे—सम्पूर्ण
 भूमिपानपरावणे पापों में से ॥ ७ ॥

इति श्रीब्रह्मवैवर्तमहापुराणे प्रकृतिखण्डे त्रिणाकृतं पृथ्वीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥



६७ — स्वधास्तोत्रम्

१५५

स्वधांश्चाग्नामात्रेण सोधयन्त्या भवेन्नरः ।
 मृच्यते सर्वपापेभ्यः व्राजपेयफलं लभेत् ॥ १ ॥
 स्वधा स्वधा स्वधेत्येवं यदि व्यात्रयं स्पृशेत् ।
 श्राद्धस्य फलमाप्नोति कालस्य तर्पणस्य च ॥ २ ॥
 श्राद्धकाले स्वधास्तोत्रं यः शृणोति समाहितः ।
 लभेच्छ्राद्धशतानां च पुण्यमेव न संशयः ॥ ३ ॥
 स्वधा स्वधा स्वधेत्येवं त्रिसन्ध्यं चः पठेन्नरः ।
 प्रियां विर्जितां स लभेत्माध्वीं पुत्रं गृणान्वितम् ॥ ४ ॥
 पिनूणां प्राणतृत्या त्वं द्विजर्जा वनरूपिणी ।
 श्राद्धाधिष्ठातृदेवी च श्राद्धादीनां फलप्रदा ॥ ५ ॥

ब्रह्मज्ञी लोकं — 'स्वधा' श्राद्धकाले अग्निमात्रेण अथवा सोम्याग्नि
 मां ज्ञाता है । जो स्वधाय लोके लूक लोकर वाजपेयफलक लोकर
 आधिकारी ही ज्ञाता है । १॥

स्वधा स्वधा स्वधा — इस श्राद्ध यात्रे लोके अथवा त्रिसंध्य
 ती श्राद्ध काले अथवा त्रिसंध्य काले पुण्यमेव ज्ञान ही लोके है । २॥

जो पुण्य अथवा पुण्य लोके अथवा त्रिसंध्य काले अथवा त्रिसंध्य काले
 लोके है अथवा लोके अथवा लोके है । ३॥

जो स्वधा स्वधा स्वधा — इस श्राद्ध यात्रे लोके अथवा त्रिसंध्य
 लोके अथवा लोके अथवा लोके है । ४॥

देवी! जो स्वधा स्वधा स्वधा — इस श्राद्ध यात्रे लोके अथवा त्रिसंध्य
 लोके अथवा लोके अथवा लोके है । ५॥

बहिर्गच्छ मन्थनमः पितृणां नृष्टिहेतवे ।
 सम्प्रीत्ये द्विजार्तानां गृहिणां वृद्धिहेतवे ॥ ४ ॥
 नित्या त्वं नित्यस्वरूपासि गूणरूपासि यत्रतं ।
 आविर्धात्रिभिर्गोधावः सृष्टो च प्रलये तव ॥ ५ ॥
 ॐ स्वस्तिश्च नमः स्वाहा स्वधा त्वं दक्षिणा तथा ।
 निरूपिताश्चतुर्वेदे घट् प्रशस्ताश्च कर्मिणाम् ॥ ६ ॥
 पुगसीस्त्वं स्वधागामी गालांके गधिकामर्खा ।
 धृतोमि स्वधात्मानं कृतं तेन स्वधा स्मृता ॥ ७ ॥
 इत्येवमुक्त्वा स ब्रह्मा ब्रह्मलांके च संसदि ।
 तस्थौ च महिमा मद्य, स्वधा सावित्रभूव ह ॥ १० ॥

॥ ४ ॥ पितृणां नृष्टिहेतवे प्राण तथा नृष्टिहेतवे अधिवृद्धिहेतवे
 द्विजार्तानां मन्थनमः मन्थनमः मन्थनमः मन्थनमः ॥ ५ ॥

॥ ६ ॥ नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे
 नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे

॥ ७ ॥ नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे
 नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे

॥ १० ॥ नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे
 नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे

॥ १० ॥ नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे
 नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे नृष्टिहेतवे

तदा पितृभ्यः प्रददौ तामेव कमलाननाम् ।
 तां सम्प्राप्य यद्युतं च पितृञ्च प्रहर्षिताः ॥ ११ ॥
 स्वधाम्नात्रमितं युष्यं चः शृणोति समाहितः ।
 म स्नातः सर्वनीर्थेषु वेदपाठफलं लभत ॥ १२ ॥

॥ इति श्रीवैश्वाम्नीतन्त्राकायाः श्रीकृष्णसूत्रे ब्रह्मकृतं स्वधाम्नात्रं सम्पूर्णम् ॥

६८ — दक्षिणास्तोत्रम्

ॐ नमो भगवते

पुग गोलोकगोपी त्वं गोपीनां प्रथम पग ।
 राधाममा तत्सखी च श्रीकृष्णप्रियसा द्विये ॥ १ ॥
 कान्तिकीपूर्णपायां तू रामं राधामहांत्मवे ।
 आविर्भूता दक्षिणांशात्कृष्णस्य तेन दक्षिणा ॥ २ ॥

यस्य विनायकं इति स्वयन्तर्पणं शक्तिं तन्त्रादि प्रोक्तं स्वधाम्ना
 त्रं इति । इति तदाका शास्त्रे तान्त्रिके स्वयन्तर्पणं तत्रैव अन्तर्
 लोकिका चले इत्ये ॥ ११ ॥

यस्य भक्त्या स्वधाम्ना कृतीन स्वयन्तर्पणं । इति तदाका स्वधाम्ना
 त्रं इति । इति तदाका शास्त्रे तान्त्रिके स्वयन्तर्पणं तत्रैव अन्तर्
 लोकिका चले इत्ये ॥ ११ ॥

॥ इति श्रीवैश्वाम्नीतन्त्राकायाः श्रीकृष्णसूत्रे ब्रह्मकृतं स्वधाम्नात्रं सम्पूर्णम् ॥

यज्ञसुधाम्ने कथा—स्वधाम्ना । तदा विनायकं तन्त्रादि प्रोक्तं स्वधाम्ना
 त्रं इति । इति तदाका शास्त्रे तान्त्रिके स्वयन्तर्पणं तत्रैव अन्तर्
 लोकिका चले इत्ये ॥ ११ ॥

यस्य भक्त्या स्वधाम्ना कृतीन स्वयन्तर्पणं । इति तदाका स्वधाम्ना
 त्रं इति । इति तदाका शास्त्रे तान्त्रिके स्वयन्तर्पणं तत्रैव अन्तर्
 लोकिका चले इत्ये ॥ ११ ॥

कमंरूपी स्वयं ब्रह्मा फलरूपी महेश्वरः ।
 यज्ञरूपी विष्णुर्ह त्वमंथां माःरूपिणी ॥ ८ ॥
 फलदाता परं ब्रह्म निर्गुणः प्रकृतः परः ।
 स्वयं कृष्णश्च भगवान् च शक्तस्त्वया त्रिना ॥ ९ ॥
 त्वमंथ शक्ति कान्ते मे शश्वज्जन्मनि जन्मनि ।
 मर्तकर्मणि शक्तोऽहं त्वया मह वगनने ॥ १० ॥
 इत्युक्त्वा नत्पुमन्तरथौ यज्ञाधिष्ठानुदेवकः ।
 तृष्टा यधुव सा देवी भेजे तं कमलाकला ॥ ११ ॥
 इदं च दक्षिणाम्नां च यज्ञकाले च यः पठेत् ।
 फलं च सर्वयज्ञानां लभते नात्र मशयः ॥ १२ ॥

॥ इति श्रीसुसामंततन्त्राप्रारण प्रकृतिषष्टे नत्पुमन्तरथौ दक्षिणाम्नां च शश्वज्जन्मनि ॥

८ ॥ १ ॥ कमंरूपी स्वयं ब्रह्मा, यज्ञरूपी विष्णुर्ह, फलरूपी महेश्वरः, त्रिना ३ । ये
 त्रिणा स्वयं ब्रह्मा, विष्णुर्ह, महेश्वरः । इन मन्त्रां शश्वज्जन्मनि ॥ ९ ॥

१० ॥ १ ॥ मर्तकर्मणि शक्तोऽहं त्वया मह वगनने । यज्ञकाले च यः पठेत् ।
 फलं च सर्वयज्ञानां लभते नात्र मशयः ॥ १२ ॥

११ ॥ १ ॥ तृष्टा यधुव सा देवी भेजे तं कमलाकला । इदं च दक्षिणाम्नां च यज्ञकाले च यः पठेत् ।

१२ ॥ १ ॥ फलं च सर्वयज्ञानां लभते नात्र मशयः । इति श्रीसुसामंततन्त्राप्रारण प्रकृतिषष्टे नत्पुमन्तरथौ दक्षिणाम्नां च शश्वज्जन्मनि ॥

१३ ॥ १ ॥ इति श्रीसुसामंततन्त्राप्रारण प्रकृतिषष्टे नत्पुमन्तरथौ दक्षिणाम्नां च शश्वज्जन्मनि ॥

॥ इति श्रीसुसामंततन्त्राप्रारण प्रकृतिषष्टे नत्पुमन्तरथौ दक्षिणाम्नां च शश्वज्जन्मनि ॥

६९—मनसास्तोत्रम्

—१००—

कन्या भगवती मा च कश्यपस्य च मानसी ।
 तंनयं मनसा देवी मनसा वा च दीव्यति ॥ १ ॥
 मनसा ध्यायते या वा परमात्मानमीश्वरम् ।
 तेन सा मनसा देवी योगेन तेन दीव्यति ॥ २ ॥
 आत्मागमा च सा देवी वैष्णवी सिद्धयोगिनी ।
 त्रियुगं च तपस्तप्त्वा कृषाम्य परमात्मनः ॥ ३ ॥
 जरत्कारुण्णरीरं च दृष्ट्वा यां क्षोणार्पाश्वरः ।
 गोर्पापतिर्नाम चक्रं जरत्कारुणि प्रभुः ॥ ४ ॥
 वाञ्छितं च ददौ तस्यै कृपया च कृपानिधिः ।
 पूजां च काग्यामास चक्रा च पुनः स्वयम् ॥ ५ ॥

भाद्रान् नागयण । नादसोम । कहत हैं — व भगवती
 जलपत्रायां माया कन्या हैं तथा मनसा योगिनी इति हैं इत्यादि
 मनसादेव्याश्च नामसं प्रत्ययस्य ॥ १ ॥

अथना तं मनसा नमस्कृत्या इति आकृष्टायाः न्याय भक्त हे ओं
 त्वं मानसायान्तरं यथाशक्त इति हे इत्यादि मनसा प्रकृत्याना ॥ २ ॥

अथानि नमस्य जलपत्रायाः इति सिद्धयोगिनी विष्णुसंयोगेन नाम
 गोपान्तं प्रकृत्या मानसा आकृष्टायाः तस्यै इति ॥ ३ ॥

गोपान्तं नाम एता इति परमेश्वरने इति नाम्ना एता प्रकृत्या
 नाम देव्याश्च इत्यादि प्रकृत्या नाम स्युः इति ॥ ४ ॥

पूजां च इति कृपायान्तरं कृपायान्तरं मनसा मनसा सभक्त्या
 नाम्ना इति इत्यादि प्रकृत्या नाम्ना इति ॥ ५ ॥

भ्रुवो च नागनांके च पृथिव्यां ब्रह्मनांकेन ।
 भ्रुवं जगत्सु गौरी सा सुन्दरी च मनाहरा ।
 जगद्गौरीति विख्याता तेन सा पूजिता भर्ता ॥ ६ ॥
 शिवशिष्या च सा देवी तेन शैवीति कीर्तिता ।
 विष्णुभक्तार्ताव शण्डे चैष्वाती तेन नागद ॥ ७ ॥
 नागानां प्राणरक्षित्री यज्ञे जनमेजयस्य च ।
 नारोश्चरीति विख्याता सा नागभारिणी तथा ॥ ८ ॥
 विषं संहर्तुमीशा सा तेन विषहरीति सा ।
 सिद्धं योगं ह्यगत्प्राप तेनार्ति सिद्धयोगिनी ॥ ९ ॥
 महाज्ञानं च गोप्यं च मृतसञ्जीवनीं पराम् ।
 महाज्ञानयुतां तां च एवदन्ति मनीषिणः ॥ १० ॥

शैवालसंग्रहनायिका भृगुगुरुद्वारा और याज्ञिक-संज्ञा इत्यादि
 पञ्च प्रसिद्धा इह। सद्यः नामधेयं नैऋत्यांका गौरीणा सुन्दरी
 और मनाहारी है। अतएव ये साक्षात् देवी जगद्गौरीके नामसे
 विख्याता हैं। इन मन्त्रान् प्राप्त करती है ॥ ६ ॥

भक्तान् शिवस्य शिष्या शरीर कन्दके आर्या ये देवा शरीर
 जगद्गौरी हैं। हे नागद! ये शण्डेन विष्णुकी शक्तये उपस्थिता हैं।
 अतएव तेषु उक्त शैवाती इति ॥ ७ ॥

तान् जनमेजयस्य नागं इन्द्रोऽपि सत्यवल्केन नागांके प्राणीकौ ह्यर्था
 इति श्री आत्मेन्द्रनाथ नाम नागेश्वरीं श्रीं ज्ञानिभारिणीं बहु वर्या ॥ ८ ॥

विष्णुना सा च कर्मणः फलं जनाधि ह्येवमेव इति सा च
 विद्वताम् । सा भक्तान् शक्तान् सन्निहितान् प्राप ह्येव श्रीं । अतः
 सिद्धयोगिनी जगद्गौरी इति ॥ ९ ॥

अतः शैवालसंग्रहनायिका भृगुगुरुद्वारा और याज्ञिक-संज्ञा इत्यादि
 पञ्च प्रसिद्धा इह। सद्यः नामधेयं नैऋत्यांका गौरीणा सुन्दरी
 और मनाहारी है। अतएव ये साक्षात् देवी जगद्गौरीके नामसे
 विख्याता हैं। इन मन्त्रान् प्राप्त करती है ॥ ६ ॥

आम्नीकस्य मुनीन्द्रस्य याता सा च तपस्विनः ।
 आम्नीक्रमाता विख्याता जगत्सु सुप्रतिष्ठिता ॥ ११ ॥
 प्रिया पुनेर्जरत्कार्गर्पुनीन्द्रस्य महात्मनः ।
 योगिनां विश्वपृथ्वस्य जगत्कार्गोः प्रिया ततः ॥ १२ ॥

ॐ नमो मनसायै ।

जगत्कार्गर्गर्गौरी मनसा मिद्धयोगिनी ।
 वैष्णवी नागधगिनी श्रीवी नागेश्वरी तथा ॥ १३ ॥
 जरत्कार्गर्गर्गर्गौरी विषहर्गति च ।
 महाज्ञानयुता चैव सा देवी विश्वपृजिता ॥ १४ ॥
 द्वादशैतानि नामानि पूजाकालं च यः पठेत् ।
 तस्य नागधवं तस्मिन् तस्य वंशाद्भवस्य च ॥ १५ ॥

य इति तस्य नामानि मुनिवन्द्येभ्यः कर्तव्यानि भक्त्यै । इति चैतानि
 नामानि आम्नीक्रमाता विख्याता जगत्सु सुप्रतिष्ठिता ॥ ११ ॥

पुनेर्जरत्कार्गर्गर्गौरी प्रिया महात्मनः
 योगिनां विश्वपृथ्वस्य जगत्कार्गोः प्रिया ततः ॥ १२ ॥

जगत्कार्गर्गर्गौरी मनसा मिद्धयोगिनी ।
 वैष्णवी नागधगिनी श्रीवी नागेश्वरी तथा ॥ १३ ॥
 जरत्कार्गर्गर्गौरी विषहर्गति च ।
 महाज्ञानयुता चैव सा देवी विश्वपृजिता ॥ १४ ॥
 द्वादशैतानि नामानि पूजाकालं च यः पठेत् ।
 तस्य नागधवं तस्मिन् तस्य वंशाद्भवस्य च ॥ १५ ॥

य इति तस्य नामानि मुनिवन्द्येभ्यः कर्तव्यानि भक्त्यै । इति चैतानि
 नामानि आम्नीक्रमाता विख्याता जगत्सु सुप्रतिष्ठिता ॥ ११ ॥

नागधीनं च शयने नागग्रन्थे च मन्दिरे ।

नागधुनं महादुर्गे नागवेष्टितविग्रहे ॥ १६ ॥

इदं स्तोत्रं पठित्वा तु मृच्यते नात्र मंशयः ।

नित्यं पठेद्यस्तं दृष्ट्वा नागवर्गः पलायते ॥ १७ ॥

दशालक्षत्रयनेन च स्तोत्रमिच्छिर्ध्वंनृणाम् ।

स्तोत्रं सिद्धं भवेद्यस्य स त्रिषं भोक्तुर्माश्वरः ॥ १८ ॥

नागाद्य भूषणं कृत्वा स भवेन्नागवाहनः ।

नागामनीं नागतल्पो महामिद्धो भवेन्नरः ॥ १९ ॥

८ इति श्रीशिवगीतासुक्तम् अष्टमोऽध्यायः ॥

नागः शयनगारगं नागधीनं च मन्दिरे ।
 नागधुनं महादुर्गे नागवेष्टितविग्रहे ॥ १६ ॥
 इदं स्तोत्रं पठित्वा तु मृच्यते नात्र मंशयः ।
 नित्यं पठेद्यस्तं दृष्ट्वा नागवर्गः पलायते ॥ १७ ॥
 दशालक्षत्रयनेन च स्तोत्रमिच्छिर्ध्वंनृणाम् ।
 स्तोत्रं सिद्धं भवेद्यस्य स त्रिषं भोक्तुर्माश्वरः ॥ १८ ॥
 नागाद्य भूषणं कृत्वा स भवेन्नागवाहनः ।
 नागामनीं नागतल्पो महामिद्धो भवेन्नरः ॥ १९ ॥

नागः शयनगारगं नागधीनं च मन्दिरे ।
 नागधुनं महादुर्गे नागवेष्टितविग्रहे ॥ १६ ॥
 इदं स्तोत्रं पठित्वा तु मृच्यते नात्र मंशयः ।
 नित्यं पठेद्यस्तं दृष्ट्वा नागवर्गः पलायते ॥ १७ ॥
 दशालक्षत्रयनेन च स्तोत्रमिच्छिर्ध्वंनृणाम् ।
 स्तोत्रं सिद्धं भवेद्यस्य स त्रिषं भोक्तुर्माश्वरः ॥ १८ ॥
 नागाद्य भूषणं कृत्वा स भवेन्नागवाहनः ।
 नागामनीं नागतल्पो महामिद्धो भवेन्नरः ॥ १९ ॥

७० — श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

इष्ट्वा उवाच

शतनाम प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलाननं ।
 यम्य प्रमादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवन्त् सती ॥ १ ॥
 ॐ सती माध्वी भवर्षाता भवानी भवमोचनी ।
 आर्या दुर्गा जया छाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी ॥ २ ॥
 पिनाकधारिणी चित्रा चण्डवण्टा महानयाः ।
 मनो बुद्धिरहङ्गाग चिन्तरूपा चिता चितिः ॥ ३ ॥
 सर्वमन्त्रमयी मन्ता मन्वानन्दस्वरूपिणी ।
 अनना भाविनी भाव्या भव्याभव्या मदागतिः ॥ ४ ॥
 शाश्वती देवमाना च चिन्ता रत्नप्रिया सदा ।
 सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञचिन्ताशिनी ॥ ५ ॥
 अपर्णानिकवर्णा च पाटला पाटलाचरी ।
 पद्माम्बरपरीधाना कलमञ्जीरगञ्जिनी ॥ ६ ॥
 अर्षयत्रिक्रमा कृग सुन्दरी सुगसुन्दरी ।
 वनदुर्गा च पातङ्गी पतङ्गमुनिपूजिता ॥ ७ ॥
 ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कामार्गी वैष्णवी तथा ।
 चापुण्ड्रा चैव वागही लक्ष्मीश्च पुरुषावृतिः ॥ ८ ॥
 विनतान्करिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा ।
 बह्वना बहुलाप्रमा सर्वबाहनवाहना ॥ ९ ॥
 निशाम्बाशुष्यहनी महिषामृगमदिनी ।
 मधुनेत्रा महन्त्री च चण्डमृण्डविनाशिनी ॥ १० ॥
 महासुरविनाशा च सर्वदानदाकाविनी ।
 सर्वशाम्भरिनी सत्या सर्वान्वधारिणी तथा ॥ ११ ॥

अङ्कश्याहम्ना च अङ्काम्बुध्या धारिणी ।
 कुमारी चक्रकन्द्या च केशाङ्गं युवती धनिः ॥ १२ ॥
 अप्रीटा चन्द्र प्रीटा च वृद्धमाता चलप्रदा ।
 महोदरी पुनःकेशा वीररूपा पद्माशला ॥ १३ ॥
 अग्निश्वाला गङ्गापुत्रा कालगत्रिस्तगध्विनी ।
 नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी ॥ १४ ॥
 शिवदूर्गा कराला च अनला यमेश्वरी ।
 कात्यायनी च मादित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी ॥ १५ ॥
 य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानामशनाष्टकम् ।
 नामाव्यं विद्यते ऐति त्रिषु लाङ्क्यु दार्वणि ॥ १६ ॥
 धनं धान्यं मृत जायां ह्यं हस्तिनमस्त च ।
 चतुर्वर्गं तथा चान्तं लभेन्मूर्तिं च शाश्वतीम् ॥ १७ ॥
 कुमारीं पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीं गुरेश्वरीम् ।
 पूजयेत् परया भक्त्या पठेन्नामशनाष्टकम् ॥ १८ ॥
 तस्य सिद्धिर्भवेद्द दैवि सर्वैः सुखैर्गपि ।
 गजानां हामलां यानि गन्धश्रियमगाज्यात् ॥ १९ ॥
 गौगंचनात्तक्तककुङ्कुमेन

मिन्दूरकपूरुगपयुत्रयेण ।

विलिख्य चन्द्र विधिना विधिजां
 भवेत् मदा धार्यते पुरारि ॥ २० ॥
 धामात्राम्प्रानिशामये चन्द्रं शर्ताभया गते ।
 विलिख्य प्रपठेत् स्तोत्रं स भवेत् सम्पदा पदम् ॥ २१ ॥

। इति श्रीब्रह्मदेवतासुक्तं श्रीदुर्गाकौस्तुभशतनामस्तोत्रं सम्बन्धम् ॥

महादेवीके विभिन्न स्वरूपोंका ध्यान

(१) भगवतां दुर्गा

विद्युद्गामममप्रथां मुगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां

कन्याभिः कग्वालखेटविलमज्जस्ताभिरामेविताम् ।

हृम्यैश्चक्रगद्गामिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं

त्रिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरं दुर्गां त्रिनयं भजे ॥

ये तीन नरसिंहान् दुर्गादेवीका ध्याता वन्ता है उनके प्रांशुगोत्रां प्रथम त्रिनयनां स्थान है। वे त्रिखेटक, कन्योदर, वली हुई, अथवा चक्रांग लला हैं। हाथोंमें त्रिशूल, शङ्ख, दास, त्रिशूल, अनेक कन्याएँ इनकी सेवासो मन्त्रों हैं। वे अपने हाथोंमें शक्र, वज्र, त्रिशूल, त्रिशूल, शङ्ख, धनुष, शक्ति और तर्जनीं मुद्रा धारण किया हुए हैं, इनका मङ्गल्य आग्निमय है तथा वे माधेय चन्द्रमाका मङ्गल धारण करती हैं।

(२) भगवती स्तुतिता

मिन्दूरामणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमालिस्फुरां

तारानायकशेखां स्मितमुखीमार्धानवक्षोरुहाम् ।

पाणिध्यामतिपूर्णग्लच्छकं रक्तात्फलं विभ्रतां

मौम्यां ग्लच्छटस्थरक्तचरणां ध्यायेन् परमार्थप्रदाम् ॥

यह देवीकामाल प्रणयिता तारा, तीन नयन, मङ्गल, माणिक्यमाला, तारा, नायकशेखा, स्मितमुखी, मार्धानवक्षोरुहाम्, पाणिध्यामतिपूर्णग्लच्छकं, रक्तात्फलं, विभ्रतां, मौम्यां, ग्लच्छटस्थरक्तचरणां, ध्यायेन् परमार्थप्रदाम् ॥
यह देवीकामाल प्रणयिता तारा, तीन नयन, मङ्गल, माणिक्यमाला, तारा, नायकशेखा, स्मितमुखी, मार्धानवक्षोरुहाम्, पाणिध्यामतिपूर्णग्लच्छकं, रक्तात्फलं, विभ्रतां, मौम्यां, ग्लच्छटस्थरक्तचरणां, ध्यायेन् परमार्थप्रदाम् ॥

(३) भगवती गायत्री

रक्तश्वेतलहिरुष्यनीलधवलैर्युक्तां त्रिनेत्राञ्जलां
 रक्तां रक्तनक्षत्रजं मणिगणैर्युक्तां कूपारीप्रियाम् ।
 गायत्रीं कमलामनां करतलव्यानज्जुण्डाम्बुजां
 पद्माक्षीं च त्रिमूर्तिं च दधतीं हंसाधिरूढां भजे ॥

श्री गुरु श्यैत, योग नाग जग यज्ञन वर्षोक्त श्रीगुरुभ्य
 मन्मथ है श्री गुरुभ्य जिन्का किन्तु श्रीगुरुभ्य त्रिनेत्रा
 त्रिनेत्रां शयन रक्तवर्ण शरीरको युक्त कला कमलाम्बुजां मातामे धार
 रक्ता है, श्री अन्तक मणिगणैः अलंकृत है श्री कमलाम्बुजां पद्माक्षी
 त्रिनेत्रां है त्रिनेत्रां श्री हंसाधिरूढां कनक ओं कुण्डलक गण श्री
 दधतीं श्री त्रिमूर्तिं शयनाशयना मृगाभूत है, श्री त्रिनेत्रां शयनाशयना
 युक्तान् अक्षय्यागो मन्मथ भगवती गायत्रीं श्री हंसाधिरूढां कनक है ।

(४) भगवती अनन्या

सिन्दुराभां त्रिनेत्रायुतशशिकलां खेचरीं रक्तवस्त्रां
 र्णानांनुहृमनाद्याप्रधिनवविलसद्दीवनाग्भरग्याम् ।
 नानालङ्कारयुक्तां मर्ममिजनयनांसिन्दुमंक्रान्तपूतिं
 देवीं यथाइत्कुशाढ्यामथयवक्रामन्नपूजां नमामि ॥

सिन्दुराभां त्रिनेत्रायुतशशिकलां खेचरीं रक्तवस्त्रां
 र्णानांनुहृमनाद्याप्रधिनवविलसद्दीवनाग्भरग्याम् ।
 नानालङ्कारयुक्तां मर्ममिजनयनांसिन्दुमंक्रान्तपूतिं
 देवीं यथाइत्कुशाढ्यामथयवक्रामन्नपूजां नमामि ॥

(५) भक्त्या सर्वमगला

हेमाधां क्रमणाभिपूर्णनयनां माशिवयभृशोज्ज्वलां

द्वारिगहलपोडगाष्टदलवृक्षपद्मिथिनां सुस्मिताम् ।

भक्तानां धनदां वरं च दधतीं साधनं हम्पेन ननु

दक्षिणाभयमानुल्लुङ्गसुफलं श्रौपङ्गलां भावये ॥

जिहवां कर्णं मणभङ्गं च, किञ्च ननु कर्णभङ्गं शिरसा
 म्हाते च नृणां कर्णभङ्गं भङ्गात्प्राप्तं विधानं, चतुस्रं च, तादृशत्वात्
 अश्वत्थं कर्णभङ्गं स्थितं सुन्दरं सुमन्त्रं यथागतं भक्तोक्ता धन
 म्भङ्गात्वात् ननु तादृशं ननु मन्त्रं ननु इति कथं अभवत्तु एव
 यिनागं एवम् । सुन्दरं चतुस्रं कर्णभङ्गं च ३१ श्रौपङ्गला
 इत्युक्तौ मे भावना कर्ता है ।

(६) भक्त्या विजया

शङ्खं चक्रं च पाशं यृगिर्माषं भृशहातेटखड्गो मुखापं

बाणं कद्धारपुष्पं तदनु करगलं मानुल्लुङ्गं दधानाम् ।

उद्वह्वालाकं वर्णां त्रिभुवनविजयां पञ्चवक्त्रां त्रिनेत्रां

दंवीं पीताम्बुगद्व्यां कुक्षधर्मिनां मन्त्रं भावयामि ॥

जो भास हाथमे चक्र, शङ्ख चक्र पाश भृशहाते विजया
 शङ्ख मन्त्र, सुन्दर मन्त्र, ननु चतुस्रं कर्णभङ्गं च ३१ श्रौपङ्गला
 धाना कर्णो च ३१ श्रौपङ्गला तादृशत्वात्प्राप्तं विधानं चतुस्रं च ३१
 त्रिभुवनविजया विजया विजया है किञ्च ननु कर्णभङ्गं च ३१ श्रौपङ्गला
 जो पीताम्बुगद्व्यां विजया च ३१ श्रौपङ्गला तादृशत्वात्प्राप्तं विधानं
 विजया विजया है किञ्च ननु कर्णभङ्गं च ३१ श्रौपङ्गला

(७) भगवती प्रत्यंगिा

श्यामाभा च त्रिनेत्रा तां सिंहवक्रां चतुर्भुजाम् ।
 ऊर्ध्वकेशीं च सिंहस्थां चन्द्राङ्कितशिरोरुहाम् ॥
 कपालशूलडमरुनागपाशधरां शुभाम् ।
 प्रत्यङ्गिां भजे नित्यं सर्वशत्रुविनाशिनीम् ॥

त्रिनेत्रा अर्धचान्द्रिणी इत्यादि हैं । त्रिनेत्र तीन नेत्र और चार भुजा हैं ।
 त्रिनेत्र । मुख प्रत्यङ्ग मुखमंडल हैं । सिंहस्थ ऊपर चंद्र मंडल हैं, जो
 कपाल शूल वृक्ष हैं । त्रिनेत्र चान्द्रिणी लक्ष्मी भां भा इत्यादि, श्री भगवती
 शूल, पाश, नाग पाश धारण कर्ता हैं तथा समस्त शत्रुओंका विनाश
 करीकता है । जो महालक्ष्मीको प्रत्यंगियाका से नित्य भजन करना है ।

(८) भगवती सौभाग्यलक्ष्मी

भृशज्जूयां द्वियथाभयवदकरा तप्तकान्तस्वराभा
 शुभाभ्राभंभयुग्मद्वयकग्धृतकुम्भाङ्कितसिच्यमाना ।
 गङ्गायायद्गुर्मांलिविमलतरदुकूलान्तवालेपनाह्वया
 प्रद्याक्षी पद्मनाभोरसि कुलवर्गलिः पद्मगा श्रीः श्रियं न ॥

त्रिनेत्रि अर्ध चान्द्रिणी इत्यादि हैं । त्रिनेत्र तीन नेत्र और चार भुजा अर्धचान्द्रिणी
 मुख प्रत्यङ्ग मुखमंडल हैं । त्रिनेत्र चान्द्रिणी लक्ष्मी भां भा इत्यादि, श्री भगवती
 शूल, पाश, नाग पाश धारण कर्ता हैं तथा समस्त शत्रुओंका विनाश
 करीकता है । जो महालक्ष्मीको प्रत्यंगियाका से नित्य भजन करना है ।

(९) भगवती अयगाजिता

नीलांतपलनिभां देवीं निद्रामृडितलोचनाम् ।
नीलकुञ्जचक्रेशाद्यां निम्ननाभीवलित्रयाम् ॥
वमभयकराभ्यांजां प्रणलार्तिविनाशिनीम् ।
पीताम्बरवर्णपैतां धृपगास्त्रग्विभूषिताम् ॥
वग्शकन्नाकृतिं सौष्यां परमैत्यप्रभाञ्जनीम् ।
शङ्खचक्रगदाभातिग्म्यहस्तां त्रिलोचसाम् ॥
मवंकामप्रदा देवीं ध्यायेन् तामपगाजिताम् ॥

विनासा करान् नीलकण्ठ-मण्डितां हे । त्रिलोक-नेत्र-निद्रामृदित-लोचनां
नीलकुञ्ज-केशादि-वसुधाग-नीमं-आर-धूम्रवर्णं हे । त्रिलोक-नाभ-निम्न
आर-त्रिलोक-युग्म-हे । पी-ताम्बर-वर्ण-पैता-ं । धृ-पगा-स्त्र-ग्वि-भूषितां । व-ग्
श-कन्ता-कृ-ति-नि-सौ-ष्यां । पर-मै-त्य-प्र-भा-ञ्ज-नी-म् । क-म-प-ना-म्बर-
श-रणा-त्र-ल-ी-र्ण-ी, आ-नु-गा-ता-ओ-र-म-न्त्र-वि-मो-च-नी-म् । श-ङ्ख-च-क्र-
ग-दा-भा-ति-ग्म-य-ह-स्ता-म् । त्रि-ल-ो-च-नी-म् । वि-ना-सा-क-र-
नी-म् । वि-ना-सा-क-र-नी-म् । वि-ना-सा-क-र-नी-म् । वि-ना-सा-क-र-नी-म् ।
वि-ना-सा-क-र-नी-म् । वि-ना-सा-क-र-नी-म् । वि-ना-सा-क-र-नी-म् ।
वि-ना-सा-क-र-नी-म् । वि-ना-सा-क-र-नी-म् । वि-ना-सा-क-र-नी-म् ।
वि-ना-सा-क-र-नी-म् । वि-ना-सा-क-र-नी-म् । वि-ना-सा-क-र-नी-म् ।

अयनी मङ्गला काली भद्रकाली करालिनी ।
शुभा क्षमा शिवा शशी स्वहा स्वहा नमस्तु नमः ।
स्वहा स्वहा स्वहा स्वहा स्वहा स्वहा स्वहा स्वहा स्वहा ।
स्वहा स्वहा स्वहा स्वहा स्वहा स्वहा स्वहा स्वहा स्वहा ।

आरती

१—श्रीदुर्गाजी

जगजननी जय! जय!! (मा! जगजननी जय! जय!!)

भवहार्गिण, भवतार्गिण, भवभामिनि जय! जय ॥ टेंड ॥

नृ ही मन-चित्त मन्त्रमत्र शब्द ब्रह्मरूपा ।

मत्स्य सनातन सुन्दर पर शिव मा-भृषा ॥ जग० ॥

आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशा ।

अमल अनल अगोचर अत्र आनन्दरशी ॥ जग० ॥

अविकारी, अघहारी, अकल, कलाधारी ।

कर्ता विधि, भतां हरि, हर संहारकारी ॥ जग० ॥

नृ विधिनष्ट, रमा, नृ उमा, पद्मामाया ।

मूल प्रकृति विद्या नृ, नृ जननी, ज्ञाया ॥ जग० ॥

गम, कृष्णा नृ, माता, वज्रगनी गथा ।

नृ वांछाकल्पद्रुम, हार्गिण मय बाधा ॥ जग० ॥

दश विद्या, नव दुर्गा, नानाशास्त्रकग ।

अष्टमानुका, योगिनि, नव नव रूप धर ॥ जग० ॥

नृ परधामनिद्रामिनि, महाविनासिनि नृ ।

नृ ही श्मशानविहार्गिण ताण्डुवर्णादिनि नृ ॥ जग० ॥

सुर-र्षिनि मारिनि म्नेय्या नृ शोभाधान ।

त्रिषयन त्रिकट-मरुणा, घनयमयी धार ॥ जग० ॥

नृ ही स्नेह-सुधासायि, नृ ज्ञानि मन्त्रधरा ।

गन्तव्यधिन नृ हा, नृ ही शिष्य नरा ॥ जग० ॥

प्लाधारनिवामिनि, इह ए-मिद्धिग्रदे ।
 कालातीना काली, कमला नृ वादे ॥ जग० ॥
 शक्ति शक्तिधा नृ ही नित्य अभेदमयी ।
 भेदप्रदर्शनि वाणो विमलं! वंद्ययी ॥ जग० ॥
 ह्य अति हीन सुखो मा! विप्रत ज्ञान धेर ।
 हैं कष्ट अति कष्टी, पर बालक तेरे ॥ जग० ॥
 निज स्वभाववश जननी! दयादृष्टि कीजे ।
 करुणा कर करुणामयी! चरण-शरण दीजे ॥ जग० ॥

२ — श्रीदेवीर्जा

आरति कीजे शैल मुनाकी ॥ आरति ० ॥
 जगदंबाकी आरति कीजे ।
 गेह सुधा, मुख सुन्दर लीजे ॥
 जिनके नाम लल दृग धीजे ।
 ऐसी वह माता वन्द्यकी ॥ आरति ० ॥
 पाय-विनाशिन कलि मल हारिणि ।
 दयामयी, भवसागरनारिणि ॥
 शम्भु-धारिणी शैल-विहारिणि ।
 बुद्धिगशि शशपति माताकी ॥ आरति ० ॥
 सिंहवाहिनी मातृ भवानी ।
 गोख-गान करे जगप्रानी ॥
 शिवक हृदयामनकी गनी ।
 करे अमली मिल जुल लकी ॥ आरति ० ॥

३ — श्रीअम्बार्जी

यद्य ऊर्ध्व गारी मंथा जय प्रवामगोरी ।
 नृमङ्गो निर्गतिदिन व्याज्ज ह्रीं जया शिव रे ॥ जय० ॥
 मांग सिंदूर विराजत टीको मृगभद्रकी ।
 उन्मत्तमे दीड गना, चन्द्रवदन भीको ॥ जय० ॥
 कनक ममान कल्पवर्ष खताम्बर राजे ।
 गहन-पुष्प गन माना, कण्ठनपर साजे ॥ जय० ॥
 कर्ण वाहन गजन्, खड्ग द्वार धारी ।
 मृग नर मृगि जल भंजक, लिनकं दुग्धमरी ॥ जय० ॥
 जानन कुण्डल शोभित, नामागं पाती ।
 क्रांतिदा चंद्र तिलाकर मम राजन ल्योतां ॥ जय० ॥
 शृष्ण निशुम्भ विहार, महिषासुर-घाती ।
 धूर्ध्रविलोचन नना निर्गतिदिन घटघाती ॥ जय० ॥
 चण्ड मुण्ड महारं, शोभितवांज हरे ।
 मधु कंटक दांड भारं, मृग भवहीन करं ॥ जय० ॥
 प्रह्लापा, रुद्राणी तन कमलारानी ।
 आगल-निगल-नाम्बानी, नृग शिव चटरानी ॥ जय० ॥
 चोमट चोमनि गावत, नृत्य करत धरूं ।
 ब्राजन ताल मृगगा आ साजत बुद्ध ॥ जय० ॥
 नृम हा जगकी माना, नृग हा हा भाना ।
 भजनकी इन्द्र हस्ता मृगु सम्भार करना ॥ जय० ॥
 युगा चार अति शोभत वर मृदा धारी ।
 लज्जांजलि फल पात्रा, मंचन नर नारी ॥ जय० ॥
 कञ्चन क्षान्त निगजत अग कर्णु घाती ।
 । श्री । चान्दम गजन कोदिरानन ल्योतां ॥ जय० ॥
 । श्री । अम्बजांकी अरति जां कांति नर मांसे ।
 कदत शिवानन्द म्यामां, सुख नर्पति दाद ॥ जय० ॥

४ — श्रीश्वाला-कालीजी

'मंगल' की सेवा, सुन मेरी देवा! ज़ाश्र जोड़ तेरे द्वार खड़े।
 पान-सुपागी, ध्वजा-नान्यल ले श्वाला तेरी भेंट धरे ॥
 सुन जगदम्बे न कर विलंब संतनकं भंडार भरे।
 संतन प्रतिपाली सदा खुशाली जै काली कल्याण करे ॥ टैक ॥

'बृह' विधाता तु जगामाता मेरा कारज सिद्ध करे।
 चरण-कमलका लिया आसरा शरण तुम्हारी आन परे ॥
 जब-जब भीर पड़े भक्तनपर तब-तब आय सहाय करे।

संतन प्रतिपाली० ॥

'गुरु' के बार सकल जग मोहो तरुणीरूप अनूप धरे।
 माता हाकर पुत्र खिलार, कहीं भार्या भोग करे ॥
 'शुक्र' सुखदाई सदा सहाई संत खड़े जयकार करे।

संतन प्रतिपाली० ॥

ब्रह्मा विष्णु महेश फल लिये भेंट देन तब द्वा खड़े।
 अटल सिंहासन बैठी माता मिर सोनेका छत्र फिरे ॥
 बार 'शनिश्चर' कुंकुम जरणी, जब लुकड़पर हुकूम करे।

संतन प्रतिपाली० ॥

खड्ग खपर त्रिशूल हाथ लिये च्यनबीजके भस्म करे।
 शुंभ निशुंभ क्षणाहिमें मारे महिषासुरको पकड़ दले ॥
 'आदित' बागी आदि भवानी जन अपनका कष्ट हरे।

संतन प्रतिपाली० ॥

कृपित होय कर दानव परि चण्ड मुण्ड सब चूर करे।
 जब तुम देखीं दुखारूप ही, पलमें संकट दूर करे ॥
 'सांस' स्वभाव दारुयी मेरी माता जनकी अर्ज कबूल करे।

संतन प्रतिपाली० ॥

साक बाणकी पहिमा धरनी सब गुण करीन बखान करे।
 सिंहपीठपर चढ़ा भजानों अदल भवनमें राख्य करे ॥
 दर्शन पावों मंगल गावों मित्र साथक नरी धेन धरे।
 संतन प्रतिपाली ० ॥

ब्रह्मा वेद प्रदे तेरे द्वारे शिवशंकर हरि ध्यान करे।
 इन्द्र कृष्ण नेरी करे आरनी रुमर कुवेर झुलाव करे ॥
 जय जननी जय मातु भवानी अदल भवनमें राख्य करे।
 संतन प्रतिपाली सदा खुशाली जय काली कल्याणकरे ॥

५ — श्रीगीताजी

जय भगवद्गति, माँ जय भगवद्गीते।
 हरि-हृद्य-कमल-विहारिणि सुन्दर सुपुनीते ॥ टेक ॥
 कर्म-सुमर्म-प्रकाशिनि कामाभक्तिहरा।
 तत्त्व-ज्ञान-विकाशिनि विद्या ब्रह्म-परा ॥ जय १ ॥
 निश्चल-भक्ति-विधायिनि निर्मल मलहारी।
 शरण-रहस्य-प्रदायिनि सब विधि सुखकारी ॥ जय २ ॥
 गण-द्वेष-विदारिणि कारिणि पीद सदा।
 भव-भय-हारिणि तारिणि परमानन्दप्रदा ॥ जय ३ ॥
 आसुर-धाव-विनाशिनि नाशिनि तम-रजनी।
 देवी-सद्गुण-दायिनि हरि-रसिका सजनी ॥ जय ४ ॥
 समता त्याग-सिखावनि, हरिसुखकी बानी।
 सकल शास्त्रकी स्वापिनि, श्रुतिवाँकी गनी ॥ जय ५ ॥
 दया-सुधा-बरसावनि मातु! कृपा कीजे।
 हरि-पद-प्रेम दान कर अपनो कर लीजे ॥ जय ६ ॥

६ — श्रीसरस्वतीजी

जय सरस्वती माता, मैया जय सरस्वती माता ।
 सद्गुण, वैभवशालिनि, त्रिभुवन विख्याता ॥ जय० ॥
 चन्द्रवदनि, पदमाम्बिनि द्युति पंगलकारी ।
 मोहि हंस-सवारी, अतुल तेजधारी ॥ जय० ॥
 बायें कर में वीणा, दूजे कर माला ।
 शीश मुकुट-मणि सोहे, गले मोतियन माला ॥ जय० ॥
 देव शरण में आये, उनका उद्धार किया ।
 पैठि मथरा दासी, असुर-संहार किया ॥ जय० ॥
 चंद्र-ज्ञान-प्रदायिनि, बुद्धि-प्रकाश करो ।
 मोहाज्ञान तिमिर का सत्वर नाश करो ॥ जय० ॥
 धूप-दीप-फल-मंत्रा—पूजा स्वीकार करो ।
 ज्ञान-चक्षु द्वे पाता, सब गुण-ज्ञान भरो ॥ जय० ॥
 माँ सरस्वती की आरती, जो कोई इन गावे ।
 हितकारी, सुखकारी ज्ञान-भक्ति पावे ॥ जय० ॥

७ — श्रीलक्ष्मीजी

ॐ जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता ।
 तुमको तिसिद्धि सैवत हर-विष्णु-धाता ॥ ॐ ॥
 उमा, श्या, ब्रह्माणी, तूम ही जग-माता ।
 मय चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥ ॐ ॥
 दुर्गाक्षय निगंजनि, सुख-सम्पत्ति दाता ।
 जो कौड तुमको ध्यावत, ऋधि-सिधि-धन पाता ॥ ॐ ॥
 तूम पाताल-निवासिनि, तूम ही शुभदाता ।
 कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की दाता ॥ ॐ ॥

जिस घर नुम रहती, नहिं सब सद्गुण आता ।
 सब माभत हो जाता, मन नहिं धरता ॥ ३५ ॥
 नुम बिन यज्ञ न होत, सब न हो पाता ।
 खान-पानका वैभव सब नुममें आता ॥ ३६ ॥
 शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता ।
 रत्न चतुर्दश नुम बिन कोई नहिं पाता ॥ ३७ ॥
 महालक्ष्मी (जी) को आर्गत, जो कोई नर पाता ।
 उर आनन्द सपाता, पाप उतर जाता ॥ ३८ ॥

८ — श्रीजानकीजी

आर्गति श्रीजनक-दुलारीकी ।
 सीतार्जी शृंगार-धारीकी ॥ टेक ॥
 जगत-जननि जगकी विस्तारिणि,
 नित्य सत्य साकेत-विहारिणि,
 परम दयापथि दीनोद्धारिणि,
 धिया भक्तन-हितकारीकी ॥ सीतार्जी ० ॥
 सती शिराम्पणि पति-हित-कारिणि,
 पति-सेवा हित बन-वन चारिणि,
 पति-हित पति-वियोग-स्वीकारिणि,
 त्याग-धर्म-मूर्ति धारीकी ॥ सीतार्जी ० ॥
 विमल-कीर्ति सब लोकन छाड़ै,
 नाम जल पावन मति आड़ै,
 सुमिश्र कटत फट दूखदाड़ै,
 शरणामत-जन-भय-हारीकी ॥ सीतार्जी ० ॥